RNI:RAJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2024-26
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month

शिव आमंत्रण

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

वर्ष-12, अंक-05, हिन्दी (मासिक), मई 2025, पृष्ठ 16, मूल्य- 12:50

09
दिव्यांग सेवा के लिए एसबीआई ने प्रदान की गाड़ी...

राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष से लेकर कई राज्यों के मुख्यमंत्री और राज्यपालों ने जताया दुख, शोक संवेदना व्यक्त की

दादी मां रतनमोहिनी का महाप्रयाण

चार साल पहले बनीं थीं मुख्य प्रशासिका

8 अप्रैल रात्रि 1.20 बजे ली अंतिम सांस

शिव आमंत्रण, आबूरोड। सृष्टि रंगमंच पर समय-समय पर कुछ ऐसी दिव्य, महान विभूतियां आती हैं जिनके आदर्श कर्म और अलौकिक आभा से संपन्न दिव्य-तपस्वी-योगी जीवन इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों में अंकित हो जाता है। मानवता की सेवा में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर लाखों लोगों को सद्मार्ग, शांति, अध्यात्म और मूल्यों का पाठ पढ़ाकर श्रेष्ठ चरित्र निर्माण करने वालीं, ज्ञान रत्नों से भरपूर और दिव्यता की मूरत दादी रतनमोहिनी महाप्रयाण कर गईं। दादी आज भौतिक रूप से भले हमारे बीच नहीं हैं लेकिन आपकी शिक्षाएं सदा प्रेरित करती रहेंगी।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका 101 वर्षीय दादी मां रतनमोहिनी का महाप्रयाण हो गया। उन्होंने अहमदाबाद के जॉइडिस हॉस्पिटल में 8 अप्रैल रात्रि 1.20 बजे अंतिम सांस ली। 10 अप्रैल को सुबह 10 बजे मुख्यालय शांतिवन के दादी निवास के सामने गार्डन में अंतिम संस्कार किया गया। देश-विदेश से आए सात हजार से अधिक लोगों ने नम आंखों से दादी को अंतिम विदाई दी। वहीं दादी के देवलोकगमन पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत सहित कई राज्यों के सीएम व राज्यपाल ने शोक जताया है।

13 साल की उम्र में ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ीं, 26 साल की उम्र में पहली बार माउंट आबू आईं थी दादी

सिंध हैदराबाद में हुआ था जन्म

25 मार्च 1925 को सिंध हैदराबाद के एक साधारण परिवार में दैवी स्वरूपा बेटी ने जन्म लिया। माता-पिता ने नाम रखा लक्ष्मी। किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि कल यही बेटी अध्यात्म और नारी शक्ति का जगमग सितारा बनकर सारे जग को रोशन करेगी। बचपन से अध्यात्म के प्रति लगन और परमात्मा को पाने की चाह में मात्र 13 वर्ष की उम्र में लक्ष्मी ने विश्व शांति और नारी सशक्तिकरण की मुहिम में खुद को झोंक दिया।

26 साल की उम्र में पहली बार माउंट आबू आईं थीं

दादी रतनमोहिनी 26 साल की युवावस्था में पहली बार ब्रह्मा बाबा के साथ माउंट आबू आईं थीं। विश्व सेवा और युवाओं को सद्मार्ग पर लाने की ऐसी धुन लगी कि सदा के लिए यहीं की होकर रह गईं। आपने अपना पूरा जीवन युवा सशक्तिकरण और युगा जागृति में लगा दिया। युवाओं से विशेष प्रेम, स्नेह के चलते आपको सभी युवाओं की दादी कहकर पुकारते थे।

34 साल की उम्र में जापान में दिया संबोधन, विद्वान रह गए अचंभित

दादी जब मात्र 34 साल की थीं तो जापान में आयोजित विश्व शांति सम्मेलन में दादी प्रकाशमणि के साथ ब्रह्माकुमारीज़ का प्रतिनिधित्व किया था। जब आपने सम्मेलन में अपना उद्बोधन देना शुरू किया और भारतीय संस्कृति की महिमा बताई तो चारों ओर सन्नाटा छा गया। इतनी कम उम्र में आध्यात्मिक गहराई की बातें सुनकर वहां मौजूद विद्वान अचंभित रह गए। इस दौरान एक साल तक एशिया देशों में अध्यात्म और योग का परचम लहराया।

फैक्ट फाइल

- 25 मार्च 1925 को सिंध हैदराबाद में हुथा था जन्म
- 50 हजार ब्रह्माकुमारी बहनों की थी मार्गदर्शक
- 1956 से 1969 तक मुंबई में दीं सेवाएं
- 1954 जापान में विश्व शांति सम्मेलन में किया संस्थान का प्रतिनिधित्व
- 40 साल तक युवा प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा रहीं

भोजन बनाने से लेकर हर काम में बंटाया हाथ

1950 का वह दौर जब ब्रह्माकुमारीज़ का स्थानांतरण माउंट आबू हुआ था। उस वक्त दादी की आयु मात्र 26 साल थी। संस्थान में मात्र 350 लोग थे। तब सभी मिल-जुलकर भोजन आदि की सेवा करते थे। ऐसे में दादी रतनमोहिनी ने भी साफ-सफाई से लेकर भोजन की सेवा में हाथ बंटाया। यहां तक कि दादी 80 साल की उम्र तक अपने सारे निजी कार्य स्वयं करती रहीं।

एकांत, अध्ययन और अध्यात्म में रही रुचि

नवनियुक्त मुख्य प्रशासिका बीके मोहिनी दीदी ने दादी के साथ के अनुभव बताते हुए कहा कि दादी में बचपन से ही भक्तिभाव के संस्कार थे। वह छोटी उम्र में ही खेलने-कूदने की जगह ध्यान में अपना वक्त बिताती थीं। पढ़ाई में होशियार होने के साथ धीर-गंभीर स्वभाव रहा। क्लास में समय पर जाना और होमवर्क समय से करने के कारण अपने शिक्षकों की सबसे प्रिय विद्यार्थियों में शामिल रहीं।

आपके नेतृत्व में चलाए देशव्यापी अभियान

दादी वर्ष 1937 में ब्रह्माकुमारीज़ की स्थापना से लेकर आज तक 87 वर्ष की यात्रा की साक्षी रही हैं। पिछले 40 से अधिक वर्ष से आप संगठन के ही युवा प्रभाग की अध्यक्षा की भी जिम्मेदारी संभाल रही हैं। आपके नेतृत्व में युवा प्रभाग द्वारा देशभर में अनेक राष्ट्रीय युवा पदयात्रा, साइकिल यात्रा और अन्य अभियान चलाए गए।

दादी रतनमोहिनी जी के निधन के बारे में जानकर बहुत दुख हुआ है। वे ब्रह्माकुमारी संस्था का एक प्रकाश स्तंभ थीं। इस संस्थान ने मेरी जीवन यात्रा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। दादी रतनमोहिनी जी ने अपनी शिक्षाओं और कार्यों से अनगिनत लोगों की सोच और जीवन को संवारा है। उन्होंने आजीवन सेवा, सद्भाव, शांति और परोपकार के संदेश का प्रसार किया। उनकी शिक्षाएं लोगों को अध्यात्म के मार्ग पर चलने और जन-कल्याण कार्यों के लिए प्रेरित करती रहेंगी। मैं पूरे विश्व में विद्यमान ब्रह्माकुमारी परिवार के सभी सदस्यों एवं इस संस्था के शुभचिंतकों के प्रति शोक संवेदना व्यक्त करती हूं।

द्रौपदी मुर्मु, राष्ट्रपति

दादी रतनमोहिनी जी की आध्यात्मिक उपस्थिति असाधारण थी। उन्हें प्रकाश, ज्ञान और करुणा की किरण के रुप में याद किया जाएगा। उनकी जीवन यात्रा, गहरी आस्था, सादगी और सेवा के प्रति अटूट प्रतिबद्धता में निहित है, जो आने वाले समय में कई लोगों को प्रेरित करेगी। उन्होंने ब्रह्माकुमारीज़ के वैश्विक आंदोलन को उत्कृष्ट नेतृत्व प्रदान किया। उनकी विनम्रता, धैर्यता, विचारों की स्पष्टता और दयालुता हमेशा सबसे अलग रही। वह शांति के मार्ग पर चल रहे लोगों का मार्ग प्रशस्त करती रहेंगी। मैं उनके साथ अपनी बातचीत को कभी नहीं भूलूंगा। इस दुख की घड़ी में मेरी संवेदनाएं उनके प्रशंसकों और ब्रह्माकुमारीज़ के वैश्विक आंदोलन के साथ हैं।

- नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री
(एक्स पर ट्वीट किया)

48 घंटे अखंड योग कर दादी को दिए

शुभ बाइब्रेशन

दादी की पार्थिक देह के सामने भाई-बहनों ने घंटों बैठकर दिन-रात किया योग

आबूरोड, राजस्थान। 101 वर्षीय राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी के महाप्रयाण के बाद संस्थान के मुख्यालय शांतिवन के कॉन्फ्रेंस हॉल में 48 घंटे तक दिन-रात अखंड योग-साधना चली। दादी की पार्थिक देह के सामने ब्रह्माकुमार भाई-बहनों ने घंटों बैठकर राजयोग मेडिटेशन के जरिए दादी की आत्मा को शांति और शक्ति के शुभ प्रकम्पन (बाइब्रेशन) दिए। लाल लाइट में 8 अप्रैल को सुबह 8 बजे से 10 अप्रैल सुबह 8 बजे तक दिन-रात अखंड योग चला। खासकर ब्रह्ममुहूर्त में सभी ने सामूहिक रूप से योग का दान दिया। बता दें कि ब्रह्माकुमारीज़ में किसी के शरीर छोड़ने पर (देहावसान) सबसे पहले योग के माध्यम से श्रद्धांजली अर्पित की जाती है। ताकि शरीर छोड़ने वाली आत्मा को शांति की अनुभूति हो। वह आगे की यात्रा दुख, तकलीफ और दर्द में न करे, बल्कि सुख, शांति, आनंद के साथ मुक्त होकर अव्यक्त वतनवासी हो।

ब्रह्माकुमारी में किसी के निधन पर करते हैं योग-तपस्या

ब्रह्माकुमारीज़ में ऐसी मान्यता है कि जब कोई शरीर छोड़ता है और हम दुख मनाते हैं या आंसु बहाते हैं तो जिसने शरीर छोड़ा है वह आत्मा दुखी होती है। इसलिए ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े कोई भी भाई या बहन उनकी पार्थिक देह के सामने बैठकर योग-साधना करते हैं। इसमें बीके सदस्य योग के माध्यम से शुभ संकल्पों के बाइब्रेशन देते हैं। साथ ही परमात्मा से शक्तियों की किरणें लेकर उस आत्मा को देते हैं, ताकि वह शांति का अनुभव करें और अपनी आगे की यात्रा खुशी-खुशी पूरी करे।

अंतिम संस्कार में भाईयों के साथ बहनें भी होती हैं शामिल

ब्रह्माकुमारीज़ में अंतिम संस्कार व अंतिम यात्रा में भाईयों के साथ बहनें भी शामिल होती हैं। साथ ही मुखाग्नि भी भाइयों के साथ बहनें भी देती हैं। ब्रह्माकुमारीज़ का मानना है कि नारी शक्ति को स्वयं परमात्मा ने आगे बढ़ाया है और विश्व शांति के कार्य में आगे रखा है। देवी-देवताओं के नाम के आगे सबसे पहले देवी का नाम आता है। भारतीय संस्कृति में नारी को सबसे ऊपर रखा गया है। इसलिए समभाव का संदेश देते बहनें भी अंतिम संस्कार में शामिल होती हैं। अंतिम संस्कार के पूर्व शिव ध्वज अर्पित किया जाता है।

यहां से होकर गुजरी बैकुंठी यात्रा

बैकुंठी यात्रा शांतिवन के कॉन्फ्रेंस हॉल से शुरु हुई जो शक्ति स्तंभ, तपस्या धाम होते हुए माउंट के लिए प्रस्थान कर गई। माउंट में ज्ञान सरोवर, ग्लोबल हॉस्पिटल, पांडव भवन, नक्की लेक म्यूजियम होते हुए दोपहर में आबू रोड के मनमोहिनीवन, आनंद सरोवर, प्रकाश स्तंभ और कॉन्फ्रेंस हॉल पहुंची। जहां दोपहर से लेकर रातभर श्रद्धांजली देने का सिलसिला जारी रहा।

पाकिस्तान से आए सिंधी तीर्थ यात्रियों ने दी श्रद्धाजंलि

पाकिस्तान के सिंध प्रान्त से भारत भ्रमण पर आए शदाणी दरबार के 300 श्रद्धालु मुख्यालय शांतिवन पहुंचे, जहां दादी को श्रद्धाजंलि अर्पित की। साथ ही अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मोहिनी दीदी से मुलाकात की। इस मौके पर रायपुर शदाणी दरबार के सन्त सत्यव्रत शदाणी, इन्दौर जोन की निदेशिका बीके हेमलता दीदी, रायपुर संचालिका बीके सविता दीदी विशेष रुप से उपस्थित रहीं।

इन्होंने दी मुखाग्नि...

दादी को मुखाग्नि अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मोहिनी दीदी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी दीदी व राजयोगिनी बीके संतोष दीदी, अतिरिक्त महासचिव राजयोगी बीके डॉ. मृत्युंजय भाई, अतिरिक्त महासचिव राजयोगी बीके करुणा भाई और दादी की निज सचिव राजयोगिनी बीके लीला दीदी ने दी। इस दौरान विशेष रुप से संयुक्त मुख्य प्रशासिका बीके शशि प्रभा दीदी व सुदेश दीदी, जयपुर सबजोन की निदेशिका बीके सुषमा दीदी, युवा प्रभाग की उपाध्यक्षा बीके चंद्रिका दीदी, मुंबई की योगिनी दीदी, जयपुर की बीके पूनम दीदी, बीके शारदा दीदी, बीके मनोरमा दीदी सहित बता देशभर से पहुंचे राष्ट्रीय कार्यकारिणी के भाई-बहनों ने पुष्पांजली अर्पित कर दादी के निमित्त योग किया।

अंतिम संस्कार में ये भी रहे मौजूद

इस दौरान सांसद लुंबाराम चौधरी बीजेपी जिलाध्यक्ष रक्षा भंडारी, पूर्व विधायक जगसीराम कोली, विश्व हिन्दू परिषद के प्रदेश प्रमुख राजाराम, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता हरीश चौधरी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के प्रदेश प्रमुख हीराराम बारड़, पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष सुरेश कोठारी, पूर्व जस्टिस वी. ईश्वरैय्या, ग्वालियर से आए सिविल जज शिवकांत कुशवाहा सहित देश-विदेश से आए सात हजार से अधिक लोगों ने दादी को मुखाग्नि दी।

राजस्थान के उप मुख्यमंत्री प्रेमचन्द बैरवा ने दी श्रद्धांजली

राजस्थान के उपमुख्यमंत्री प्रेमचन्द बैरवा, राज्यमंत्री ओटराम देवासी ने दादी रतनमोहिनी की समाधिस्थल पहुंच भावपूर्ण श्रद्धांजली अर्पित की। इसके बाद वे दादी के कमरे में गए वहां कुछ मिनट मौन रहकर दादी को याद किया। इस दौरान उप मुख्यमंत्री बैरवा ने कहा कि दादी का जीवन मानवता के लिए समर्पित था। उन्होंने इस संस्थान को दुनिया के कई देशों में पहुंचाने का महान कार्य किया। उन्हें हमेशा इसके लिए याद किया जाएगा। राज्यमंत्री देवासी ने कहा कि दादी का जाना आध्यात्मिक जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। ब्रह्माकुमारीज ने उनके निर्देशन में बड़ी ऊंचाइयां प्राप्त की हैं। दादी के प्रयासों से इस संस्थान ने स्वच्छता से लेकर कृषि एवं ग्राम विकास एवं जल संरक्षण के क्षेत्र में सराहनीय कार्य करती रही हैं। सरकार का हमेशा ही हर कदम पर इस संस्थान का सहयोग अतुलनीय है। इस दौरान सांसद लुम्बाराम चौधरी, आबू-पिंडवाड़ा विधायक समारामग गरासिया, बीजेपी जिलाध्यक्ष रक्षा भंडारी, जिला प्रमुख अर्जुनराम पुरोहित, बीजेपी के वरिष्ठ नेता गणपत सिंह, पूर्व विधायक जगसीराम कोली, पूर्व जिलाध्यक्ष सुरेश कोठारी, बाबू भाई पटेल, बीके प्रकाश तथा पीआरओ बीके कोमल समेत कई लोग उपस्थित थे। इसके बाद उपमुख्यमंत्री सहित सभी जनप्रतिनिधियों ने अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मोहिनी से मुलाकात की। मोहिनी दीदी ने कहा कि राजयोग ध्यान से व्यक्तिगत जीवन ही नहीं बल्कि राजनीतिक जीवन में भी इसका बड़ा महत्व है। एसडीएम शंकर लाल समेत कई लोग उपस्थित थे।

84 वर्षीय राजयोगिनी मोहिनी दीदी बनीं मुख्य प्रशासिका

चार साल पूर्व बनीं थीं अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, 1978 से यूएसए में दे रही थीं सेवाएं

शिव आमंत्रण, आबूरोड, राजस्थान।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की नई मुख्य प्रशासिका के रूप में 84 वर्षीय राजयोगिनी मोहिनी दीदी को दायित्व सौंपा गया है। आप ब्रह्माकुमारीज़ की छठीं मुख्य प्रशासिका बनी हैं। इसके पूर्व आप पिछले चार साल से अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका का दायित्व संभालती आ रही थीं। मैनेजमेंट कमेटी की बैठक में सर्वसहमति से यह निर्णय लिया गया है। बता दें कि 8 अप्रैल को मुख्य प्रशासिका 101 वर्षीय राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी के देहावसान के बाद यह नियुक्ति की गई है। इसके पूर्व दादियां ही मुख्य प्रशासिका बनती आई हैं। पहली बार दीदियों के हाथ में संस्थान की बागडोर सौंपी गई है। वहीं संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी को अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका नियुक्त किया गया है। वर्ष 1941 में दिल्ली में जन्मी बीके मोहिनी दीदी ने दिल्ली विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की है। उन्होंने इतिहास, राजनीति विज्ञान और पत्रकारिता में कला स्नातक की डिग्री ली है। आपने उत्तर और दक्षिण अमेरिका और कैरिबियन में क्षेत्रीय समन्वयक के रूप में सेवाएं दी हैं।

राजयोगिनी मोहिनी दीदी

राजयोगिनी मुन्नी दीदी

पहली बार दीदी संभालेंगी मुख्य प्रशासिका का दायित्व

ब्रह्माकुमारीज़ के इतिहास में अब तक मुख्य प्रशासिका का दायित्व दादियों को दिया जाता रहा है। यह पहला मौका है जब दीदी यह दायित्व संभालेंगी। सिंधी में बड़ी बहन को दादी कहा जाता है, यही कारण है कि पूर्व में जो बहनें ब्रह्मा बाबा के साथ जुड़ी उन्हें दादी कहकर संबोधित किया जाता था। मोहिनी दीदी ने पहली बार वर्ष 1972 में विदेश में सेवाकेंद्रों खोले। वर्ष 1976 में उत्तरी अमेरिका में पहली बार ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्रों की स्थापना की। पहले कैरेबियन और फिर 1978 में अमेरिका के लिए एक क्षेत्रीय मुख्यालय की स्थापना की। आप संस्थान के यूएसए के वर्ल्ड स्प्रीचुअल आर्गनाइजेशन की अध्यक्षा भी हैं। 1981 से संयुक्त राष्ट्र में एक गैर सरकारी संगठन के रूप में ब्रह्माकुमारीज़ का प्रतिनिधित्व कर रही हैं।

ब्रह्मा बाबा के साथ रही हैं दीदी : मुख्य प्रशासिका नियुक्त होने पर राजयोगिनी बीके मोहिनी दीदी ने कहा कि मुझे ब्रह्मा बाबा के साथ रहने और शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। उन शिक्षाओं को अपने जीवन में और सामाजिक जीवन में उपयोग करती हूं। जैसा घरों में होता है कि पहले दादा-दादियों को आगे रखा जाता है। इसी तरह अब दादियों के बाद मुझे यह दायित्व सौंपा गया है।

इन राज्यपाल और मुख्यमंत्रियों ने भेजा संदेश

- गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने शोक संदेश भेजा है कि दादीजी ने अंतिम दिनों तक पूर्ण जीवन जीया। मात्र दो दिन की अस्वस्थता के बाद नश्वर देह त्याग किया। आपने सात दशक तक समर्पित भाव से नारी जागृति, मानवीय मूल्यों, शांति और आध्यात्मिक जागृति के लिए जो सेवाएं की हैं, वह समाज और विश्व के लिए एक अनमोल धरोहर हैं। आपकी सहजता, करुणा, अनुशासन और आध्यात्मिक प्रज्ञा ने असंख्य जीवनों को दिशा और प्रेरणा दी।
- **तेलंगाना के राज्यपाल जिष्णु देव वर्मा ने कहा कि दादी ने अपना पूरा जीवन मूल्य और आध्यात्मिकता के प्रचार-प्रसार ने लगा दिया।**
- उप्र के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लिखा है कि दादी की विनम्रता, सेवा भावना, धैर्य, करुणा, विचारों की स्पष्टता, भारतीय संस्कृति और मूल्यों के प्रसार के लिए उनके अतुल्य योगदान सदैव स्मरणीय एवं प्रेरणाप्रद रहेंगे।
- **राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने लिखा है कि लाखों लोगों में आध्यात्मिक प्रकाश को जगाने वाली दादी रतनमोहिनी जी के सेवा कार्यों को भुलाया नहीं जा सकता है। दादी का जीवन प्रेरक रहा।**
- मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शोक संदेश में लिखा है कि ब्रह्माकुमारीज़ के लिए यह दुख का क्षण है। मैं सभी सदस्यों के प्रति शोक संवेदना व्यक्त करता हूं। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें।
- **गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने लिखा है कि दादी ने बचपन में ही ब्रह्मा बाबा के सान्निध्य में अपना जीवन आध्यात्मिक सेवाओं के लिए समर्पित कर दिया। आप शतायु तक सेवाएं करते रहे। ऐसी पुण्य आत्मा के प्रति मेरी भावभीनी श्रद्धांजली।**
- बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने लिखा कि दादी ने अपना पूरा जीवन समाज कल्याण में समर्पित कर दिया। उनके निधन से आध्यात्मिक जगत को अपूर्णीय क्षति हुई है। दुख की इस घड़ी में मैं उनके अनुयायियों के साथ हूं।
- **पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा कि आध्यात्मिक प्रेरक व्यक्तित्व, दिव्य विभूति दादी रतनमोहिनी द्वारा मानवता की सेवा में की गई सेवाएं सदा स्मृति में रहेंगी। आपका परोपकारी जीवन लोगों के लिए प्रेरक रहा।**
- तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी ने लिखा है कि 140 देशों में फैले ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी के निधन के समाचार से दुखी हूं। आपने अपना पूरा जीवन लोगों के कल्याण में लगा दिया।

नेपाल के राष्ट्रपति व नाइजीरिया के पूर्व राष्ट्रपति ने भी भेजा शोक संदेश

- केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने कहा कि लोगों को आध्यात्मिक उत्थान के लिए मार्गदर्शन करने के लिए समर्पित जीवन वाली दादी रतन मोहिनी जी ने दुनिया भर में लाखों लोगों के जीवन को प्रकाशित किया। उन्होंने अपनी करुणा से व्यथित आत्माओं को सांत्वना दी और अपनी प्रेरणा से आध्यात्मिक साधकों को आंतरिक शक्ति प्रदान की। उनके निधन से एक ऐसा शून्य पैदा हो गया है जो हमेशा पीड़ा देता रहेगा।
- भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा ने कहा कि दादीजी का जीवन ईश्वरीय सेवा, राजयोग ध्यान और आध्यात्मिक ज्ञान से मानवता के उत्थान के लिए निस्वार्थ भाव से समर्पित था। उनकी आत्मा अपनी विरासत और शिक्षाओं के माध्यम से हमारा मार्गदर्शन करती रही है।
- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत ने कहा कि दादीजी ने पूरे जीवन में हजारों युवा बहनों के प्रशिक्षण का महत्वपूर्ण कार्य निभाया। भारतीय संस्कृति और मूल्यों के प्रचार के लिए देशभर में कई पदयात्राएं कीं।
- दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि दादी का पूरा जीवन ब्रह्माकुमारीज़ के लिए समर्पित रहा। उनकी शिक्षाएं और मार्गदर्शन हमेशा प्रेरित करता रहा है।
- केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने लिखा कि दादी जी का संपूर्ण जीवन योग, तपस्या और सेवा का प्रतीक रहा। उन्होंने लाखों लोगों को आध्यात्मिक मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। उनका स्नेह, विनम्रता और दिव्यता सदैव स्मरणीय रहेगी। उनका निधन संपूर्ण मानव समाज व आध्यात्मिक जगत के लिए अपूरणीय क्षति है।
- केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने कहा कि दादी का जीवन आध्यात्मिक साधना, सेवा, समर्पण व नेतृत्व का अद्वितीय उदाहरण रहा है। उनकी सरलता, संयम और सेवा भावना सभी के लिए प्रेरणादायक है।
- केंद्रीय जनजातीय कार्य मंत्रालय राज्यमंत्री दुर्गादास उइके ने कहा कि दादीजी की कर्मयोगी की स्थिति और परमात्मा प्यार में डूबे रहकर की गई सेवाओं से पूरे विश्व में ब्रह्माकुमारीज़ की आध्यात्मिक सेवाओं का ध्वज शान से लहरा रहा है। आपके सान्निध्य में हजारों ब्रह्माकुमारी बहनों ने अपना जीवन ईश्वरीय कार्य में अर्पण किया है।

- नेपाल के राष्ट्रपति रामचंद्र पौडेल ने कहा कि दादीजी का देहावसान न केवल ब्रह्माकुमारीज़ बल्कि सम्पूर्ण आध्यात्मिक, नैतिक जगत के लिए क्षति है। मैं दुख की इस घड़ी में संस्था के साथ हूं।
- नाइजीरिया के पूर्व राष्ट्रपति ओलुसेगुन ओबासान्जो ने कहा कि दादीजी के साथ अपने व्यक्तिगत संबंधों और बातचीत के दौरान मैंने उनके असीम प्रेम, गहरी समझ और सेवा के प्रति समर्पण को प्रत्यक्ष रूप से देखा। वह न केवल एक आध्यात्मिक नेता थीं, बल्कि कई लोगों के लिए एक गुरु और मार्गदर्शक प्रकाश स्तंभ भी थीं, जिन्होंने दुनिया को आंतरिक शांति, करुणा और निस्वार्थ देने की शक्ति का महत्व दिखाया। मानवता के लिए उनके योगदान ने सीमाओं को पार कर लिया। लोगों को अखंडता, एकता और दयालुता के साथ जीने के लिए प्रेरित किया।
- मप्र के उपमुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल ने कहा कि दादी का देहावसान न केवल संस्था अपित आध्यात्मिक जगत और समाज के लिए अपूरणीय क्षति है। मेरी ओर से दादी के प्रति गहरी शोक संवेदना है।
- मप्र के कैबिनेट मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने वीडियो संदेश में कहा कि दादीजी ने जिस तरह से युवाओं और महिलाओं को प्रेरित किया उनके सेवा कार्यों को सदा याद रखा जाएगा।
- चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) जनरल अनिल चौहान ने कहा कि दादीजी का जीवन ज्ञान, करुणा और आध्यात्मिक शक्ति का प्रतीक था। शांति, पवित्रता और सार्वभौमिक भाईचारे के संदेश को फैलाने में उनकी अथक सेवा ने दुनियाभर में अनगिनत लोगों के जीवन पर अमिट छाप छोड़ी है।
- मप्र के अनुसूचित जाति कल्याण मंत्री नागर सिंह चौहान ने कहा कि दादीजी का देहावसान न केवल संस्था के लिए अपितु अध्यात्म जगत और समाज के लिए भी अत्यंत संवेदनशील क्षण है। मैं दादी के प्रति अपनी गहरी संवेदनाएं व्यक्त करता हूं।
- राजस्थान सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री अविनाश गहलोत ने कहा कि भारत सहित कई देशों में संस्थान के सदस्यों के दुख की इस घड़ी में संवेदना व्यक्त करता हूं।
- गुजरात के बीजेपी के प्रवक्ता हिरेन कोटक ने कहा कि दादी ने ब्रह्माकुमारीज़ के वैश्विक आंदोलन को उत्कृष्ट नेतृत्व प्रदान किया।
- मप्र रीवा के सांसद डॉ. राजेश मिश्र ने कहा कि दादीजी ने अपना संपूर्ण जीवन विश्व कल्याण में अर्पित कर दिया। आप संस्था की स्थापना से लेकर आज तक सहभागी रहीं।

- केंद्रीय विधि एवं न्याय राज्य मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने कहा कि दादीजी का जीवन आध्यात्मिक साधना, सेवा, समर्पण व नेतृत्व का अद्वितीय उदाहरण रहा है। उनकी सरलता, संयम और सेवा भावना सभी के लिए प्रेरणादायक है।
- राजस्थान की उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने कहा कि दादीजी का समाज के उत्थान में योगदान प्रेरणास्रोत है। उनके संस्कार सदा हम सभी का मार्गदर्शन करते रहेंगे।
- महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने कहा कि दादी का जीवन आध्यात्मिक जागृति, सेवा और प्रेम का प्रतीक रहा। उन्होंने न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में लाखों लोगों के जीवन को सकारात्मक दिशा दी।
- मप्र के उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा ने कहा कि दादी ने अपना जीवन विश्व कल्याण में लगा दिया। आपके नेतृत्व में युवा प्रभाग ने अनेक कीर्तिमान रचे।
- श्री दशनाम महादेश अखाड़ा शंकर मठ आश्रम के पीठाधीश्वर स्वामी दिनेशानंद भारती महाराज ने कहा कि दादी रतनमोहिनी जी ने अपना पूरा जीवन ज्ञान और योग के प्रकाश को फैलाने में समर्पित कर दिया। 101 वर्ष की आयु में भी उनकी सक्रियता, ज्ञान की गहराई और स्नेहपूर्ण व्यवहार हम सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनका दिव्य व्यक्तित्व, शांत स्वभाव और आध्यात्मिक ज्ञान की शक्ति सदैव हमारी स्मृति में जीवित रहेगी।
- अखिल भारतीय हिंदू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष मुन्ना कुमार शर्मा ने कहा कि प्रेरणादायी, सरलता, सेवा एवं अनुशासन की प्रतीक दादीजी की कमी हमेशा महसूस होती रहेगी। हमारे प्रति उनका प्यार और आशीर्वाद अद्वितीय था।
- भरतपुर के सिद्धपीठ श्रीलालजी महाराज मंदिर के पीठाधीश्वर डॉ. स्वामी कौशल किशोर दास महाराज ने कहा कि दादी ने बचपन से ही संस्था से जुड़कर सेवाओं को बुलंदियों तक पहुंचाया। ऐसी पावन आत्मा का महाप्रयाण समग्र मानव जाति के लिए अपूरणीय क्षति है।
- एक्टर अनुपम खेर ने कहा कि 1936 से ब्रह्माकुमारीज़ के लिए सेवा में संलग्न और उनकी सबसे बड़ी प्रेरणास्रोत दादी का जीवन और सीख हमेशा प्रेरणादायक रही है और हमेशा रहेगी।

विदेश से लेकर देश में कई अवार्ड और पुरस्कार से नवाजा गया

दादी ब्रह्माकुमारीज़ की स्थापना से लेकर वटवृक्ष बनने की रहीं साक्षी

शिव आमंत्रण, आबूरोड, राजस्थान।

राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ब्रह्माकुमारीज़ की वर्ष 1937 में स्थापना से लेकर 88 वर्ष की यात्रा की साक्षी रही हैं। उनके जीवन काल में ही संस्थान बहुत ही छोटे स्तर से विश्व गगन तक पहुंचा। जब वह ब्रह्मा बाबा के साथ 26 साल की उम्र में माउंट आबू आईं थीं तब मात्र 350 भाई-बहनें ही साथ थे, लेकिन आज 50 हजार ब्रह्माकुमारी बहनें सेवाएं दे रही हैं। वहीं 22 लाख विद्यार्थी नियमित रूप से ईश्वरीय पढ़ाई पढ़ रहे हैं।

बाबा से पहली बार मिलने पर हुई थी दिव्य अनुभूति-

एक साक्षात्कार में दादी ने बताया था कि वर्ष 1937 की बात है। तब लक्ष्मी (दादी रतनमोहिनी के बचपन का नाम) 12 वर्ष की थीं। स्कूल की छुट्टियों के दौरान मां के साथ भागवत गीता के सत्संग में गईं। वहां मैं पहली पंक्ति में बैठ गईं। बाबा (ब्रह्मा बाबा) आए और वह भी बैठ गए। ओम् ध्वनि के साथ सत्संग की शुरुआत हुई। जैसे ही मैंने ब्रह्मा बाबा के मुख से ओम् ध्वनि सुनी तो गहरी आंतरिक शांति का अनुभव किया। ऐसा लगा कि मैं इस दुनिया में नहीं हूं। मेरा शरीर नहीं है। मुझे यह भी याद नहीं रहा कि मैं कहां बैठी हूं। हाथ-पैर का एहसास नहीं रहा कि इस शरीर में हैं भी कि नहीं। मैं सुनहरे लाल प्रकाश की दुनिया में चली गई। जहां तक मुझे याद है मैं अपनी चेतना को आसपास के वातावरण से अलग कर चुकी थी। उस वक्त मैंने अनुभव किया कि बाबा के माध्यम से कोई ऊंच, दिव्य और अलौकिक शक्ति बोल रही है।

युवा प्रभाग की अध्यक्ष और संयुक्त मुख्य प्रशासिका भी रहीं

दादी रतनमोहिनी पिछले 40 साल से संस्थान के युवा प्रभाग के अध्यक्षा के रूप में जिम्मेदारी संभाल रही थीं। साथ ही आप ब्रह्माकुमारी बहनों के लिए चलाए जाने वाले टीचर्स ट्रेनिंग प्रोग्राम, पर्सनल एडमिनिस्ट्रेशन डिपार्टमेंट की हैड के रूप में भी जिम्मेदारी संभालती रही हैं। 25 अगस्त 2007 में दादी प्रकाशमणि के देहावसान के बाद आप संयुक्त मुख्य प्रशासिका बनी थीं। 27 मार्च 2020 को दादी जानकी के देहावसान के बाद आप अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका बनीं और 11 मार्च 2021 को दादी हृदयमोहिनी के देहावसान के बाद 15 मार्च 2021 को आपको मुख्य प्रशासिका घोषित किया गया। तब से आपके कुशल संचालन में देश-विदेश में सेवाएं जारी थीं।

बहनों की ट्रेनिंग और नियुक्ति की कमान : वर्ष 1996 में ब्रह्माकुमारीज़ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में तय हुआ कि अब विधिवत बेटियों को ब्रह्माकुमारी बनने की ट्रेनिंग दी जाएगी। इसके लिए एक ट्रेनिंग सेंटर बनाया गया और तत्कालीन मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि ने आपको ट्रेनिंग प्रोग्राम की हैड नियुक्त किया। तब से लेकर आज तक बहनों की नियुक्ति और ट्रेनिंग की जिम्मेदारी दादीजी के हाथों में रही। दादी के नेतृत्व में अब तक 6000 सेवाकेंद्रों की नींव रखी गई है।

देश में बनाए कई रिकार्ड : दादी के ही नेतृत्व में 1985 में भारत एकता युवा पदयात्रा निकाली गई। इससे 12550 किमी की दूरी तय की गई। यात्रा का शुभारंभ तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने किया था। कन्याकुमारी से दिल्ली (3300 किमी) की सबसे लंबी यात्रा रही। दादी के निर्देशन में करीब 70 हजार किलोमीटर से अधिक की पैदल यात्राएं निकाली गईं।

सदा ईश्वरीय पढ़ाई में रहती थी मगन

दादी रतनमोहिनी में बचपन से ही भक्तिभाव के संस्कार रहे हैं। छोटी सी उम्र होने के बाद भी आप अन्य बच्चों की तरह खेलने-कूदने के स्थान पर ईश्वर की आराधना में अपना ज्यादा वक्त गुजारती थीं। स्वभाव धीर-गंभीर था। पढ़ाई में भी होशियार होने के साथ प्रतिभा संपन्न रहीं हैं। दादी बचपन में बहुत शर्मीले और संकोची स्वभाव की थीं। क्लास में हमेशा समय पर जाना और पूरा होमवर्क करने के कारण आप अपने समय में शिक्षकों की सबसे प्रिय विद्यार्थी में से एक थीं। दादी के विनम्र स्वभाव, सरल स्वभाव और मेधा को देखकर शिक्षक कहते थे कि यह बालिका तो जैसी देवी है। किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि कल यही बालिका आगे चलकर दुनिया के नारी शक्ति के सबसे बड़े और वैश्विक संगठन की मुखिया का दायित्व निभाएगी।

ब्रह्मा बाबा के साथ 32 साल का लंबा सफर तय किया

दादीजी ने वर्ष 1937 से लेकर ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने (वर्ष 1969) तक साए की तरह साथ रहीं। इन 32 साल में आप बाबा के हर पल साथ रहीं। बाबा का कहना और दादी का करना यह विशेषता शुरू से ही थी। बाबा जो शिक्षाएं भाई-बहनों को देते तो दादी अक्षरशः उन्हें अपने जीवन में शिरोधार्य करतीं। यही कारण है कि सैकड़ों भाई-बहन होने के बाद भी आप विशेष स्नेही और भरोसेमंद रहीं। बाबा ने जिस आस से आप को जो जिम्मेदारी सौंपी आपने उससे कई गुना बेहतर करके उसे साबित कर दिखाया। बाबा के तपस्वी, वैरागी और त्यागी जीवन की छाप आप पर शुरू से ही देखने को मिली। सैकड़ों भाई-बहनों के बाद भी आप बाबा की विशेष स्नेह की पात्र थीं। बाबा के जीवन का एक-एक कर्म एक दिव्य अलौकिक फरिश्ते की तरह था उन्हीं पद चिह्नों पर चलते हुए दादीजी ने भी अपना जीवन ऊंच,श्रेष्ठ और महान बनाया।

देशभर में छह हजार सेवाकेंद्रों पर रिकार्ड 48 हजार कार्यक्रम कर बनाया कीर्तिमान

राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक आयोजित : संस्थान की वार्षिक सेवा रिपोर्ट सेवांजली का वरिष्ठ पदाधिकारियों ने किया विमोचन

देशभर में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस और विश्व ध्यान दिवस को व्यापक स्तर पर मनाने की बनाई कार्ययोजना

शिव आमंत्रण, आबूरोड, राजस्थान।

ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय शांतिवन में राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक आयोजित की गई। इसमें संस्थान की सालभर की सेवाओं की रिपोर्ट पेश की गई। संस्थान द्वारा वर्ष 2024-25 में भारतभर में 48863 कार्यक्रम धर्म, संस्कृति, अध्यात्म, योग, यौगिक खेती, नशामुक्ति, महिला सशक्तिकरण, पर्यावरण संरक्षण और यातायात जागरुकता को लेकर आयोजित किए गए। राजयोग एजुकेशन एवं रिसर्च फाउंडेशन के तहत संचालित मेडिकल विंग द्वारा सबसे ज्यादा 12119 कार्यक्रम आयोजित किए गए। नशामुक्त भारत अभियान के तहत देश के स्कूल-कॉलेज, यूनिवर्सिटी, जेल और सामाजिक संस्थाओं में 8528 कार्यक्रमों के साथ नया रिकार्ड बनाया गया। अतिरिक्त महासचिव बीके डॉ. मृत्युंजय भाई ने बताया कि बैठक में सर्व सहमति से निर्णय लिया गया कि 21 जून अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को देश-विदेश में व्यापक स्तर पर मनाया जाएगा। साथ ही 21 दिसंबर विश्व ध्यान दिवस पर भी बड़े-बड़े शहरों में मेगा कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे, ताकि भारत के प्राचीन योग का संदेश जन-जन तक पहुंच सके। इस दौरान अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मोहिनी दीदी व राजयोगिनी बीके जयंती दीदी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी दीदी, अतिरिक्त महासचिव बीके करुणा भाई ने सेवा रिपोर्ट सेवांजली का विमोचन किया।

जन कल्याणकारी अभियान चलाए जा रहे

अतिरिक्त महासचिव बीके करुणा भाई ने बताया कि संस्थान के सोशल मीडिया प्लेटफार्म के जरिए लोगों को बड़े स्तर पर मेडिटेशन सिखाया जा रहा है। घर बैठे वह ज्ञान के साथ योग सीख रहे हैं। अतिरिक्त महासचिव बीके डॉ. मृत्युंजय भाई ने संचालन करते त कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा लोगों को आध्यात्मिक शिक्षा के साथ-साथ जन कल्याणकारी कार्यों के माध्यम से अभियान चलाए जा रहे हैं। इस दौरान परिवहन एवं यातायात प्रभाग द्वारा प्रकाशित की गई यात्रीगण कृपया ध्यान दें पुस्तक का विमोचन प्रभाग की अध्यक्षा मुंबई की बीके दिव्यप्रभा दीदी सहित सभी अतिथियों द्वारा किया गया।

पूरे गुजरात में निकाली जाएगी शांति यात्रा

नवंबर माह में पूरे गुजरात में एक साथ ब्रह्माकुमारीज़ के 500 सेवाकेंद्रों और पांच हजार पाठशालाओं से एक ही समय पर शांति यात्रा निकाली जाएगी। इन यात्राओं में एक लाख से अधिक भाई-बहनें शामिल होकर रिकार्ड बनाएंगे। यात्रा का मकसद विश्व और समाज को शांति, प्रेम का संदेश देना है। वहीं विश्व ध्यान दिवस पर अहमदाबाद में वर्ल्ड मेडिटेशन फॉर ग्लोबल पीस मेगा कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। जिसमें 60 हजार लोग शामिल होंगे। सभी योग के माध्यम से पूरे विश्व में शांति के प्रकम्पन फैलाएंगे।

बच्चों के लिए विशेष अभियान लीफ चलाएंगे

बीके सुप्रिया बहन ने बताया कि शिक्षा प्रभाग द्वारा इस वर्ष बच्चों के लिए लीडरशिप विथ इनिटिटिव अवेयरनेस प्रोग्राम चलाया जाएगा। इसके तहत स्कूल-कॉलेज के विद्यार्थियों में नेतृत्व विकास के लिए प्रेरक क्लास कराई जाएगी। उनकी व्यक्तिगत समस्याओं को काउंसलिंग के माध्यम से दूर करने का प्रयास किया जाएगा।

7वीं इंटरनेशनल हाफ मैराथन 19 अगस्त को आबू रोड से माउंट तक

मीटिंग में बीके भानू भाई व बीके सचिन भाई ने बताया कि 7वीं दादी प्रकाशमणि माउंट आबू इंटरनेशनल हाफ मैराथन आयोजित की जाएगी। इसमें देशभर से 3500 से अधिक धावक भाग लेंगे। इस बार सभी धावकों का माइंड पावर बढ़ाने के लिए दो दिन की मेडिटेशन रिट्रीट भी रखी गई है। जो 16 से 19 अगस्त तक चलेगी।

राजयोग से दें विश्व को शांति का दान-

इस दौरान पंजाब जोन की निदेशिका बीके प्रेम दीदी ने कहा कि देश-दुनिया के हालात को देखते हुए सभी भाई-बहनों राजयोग ध्यान से दुनिया को शांति, प्रेम के बाइब्रेशन का दान जरूर करें। मैसूर सबजोन की निदेशिका बीके लक्ष्मी दीदी ने कहा कि निश्चय में ही विजय समाई हुई है। परमात्मा पर संपूर्ण निश्चय ही सफलता दिलाता है। युवा प्रभाग की उपाध्यक्षा व महादेवनगर अहमदाबाद सबजोन की निदेशिका बीके चंद्रिका दीदी ने कहा कि सदा स्वयं के प्रति, साथियों, कार्य और विश्व के प्रति संपूर्ण सकारात्मक दृष्टिकोण रखें। हुबली के गीता विशेषज्ञ बीके वसबराज राजऋषि ने गीता कार्यक्रम की रिपोर्ट पेश की। सुबह के सत्र में इंदौर जोन की निदेशिका बीके हेमलता दीदी, कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्षा बीके सरला दीदी ने व्यर्थ चिंतन से मुक्त रहकर अपनी स्थिति ज्ञान स्वरूप बनाने की प्रेरणा दी।

अफ्रीका महाद्वीप के 34 देशों में एक हजार कार्यक्रम हुए-

विदेश सेवाओं के बारे में अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके जयंती दीदी ने बताया कि सालभर में अफ्रीका महाद्वीप के 34 देशों में एक हजार से अधिक ध्यान सत्र के कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसमें लोगों को सनातन संस्कृति अध्यात्म, राजयोग मेडिटेशन, माइंड पावर और भारत की गौरवशाली परंपरा के बारे में बताया गया। नैरोबी से आईं बीके प्रतिभा बहन ने बताया कि मैक्सिको के रिट्रीट सेंटर में खासतौर पर सेना के लिए मेडिटेशन सेशन आयोजित किए गए। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मोहिनी दीदी ने भी संबोधित किया।

उमंग-उत्साह के साथ सेवा करते रहें-

संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके सुदेश दीदी ने कहा कि आप सभी उमंग-उत्साह के साथ इसी तरह सेवा करते रहें। सेवा के दौरान भी अनेक परिस्थितियां आती हैं लेकिन दृढ़ता के साथ आगे बढ़ते हैं तो सब आसान हो जाता है। संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके संतोष दीदी व राजयोगिनी बीके शशि दीदी, दिल्ली हरिनगर सेवाकेंद्र की निदेशिका बीके शुक्ला दीदी, राजकोट गुजरात की जोन की निदेशिका बीके भारती दीदी, जयपुर सबजोन की निदेशिका बीके सुषमा दीदी, ग्लोबल हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. प्रताप मिड्ढा, बीके शारदा दीदी, बीके बसवराज राजऋषि ने भी अपने सुझाव दिए।

संपादकीय

आत्मा की आवाज़ सुनने का मार्ग है एकांत

आधुनिक जीवन की आपाधापी, शोरगुल और व्यस्तता ने हमें बाहरी दुनिया से जोड़ तो दिया है, पर भीतर की दुनिया से काट दिया है। ऐसे समय में एकांत का महत्व और भी बढ़ जाता है। एकांत केवल अकेलापन नहीं है, बल्कि यह आत्मा से जुड़ने की वह पवित्र अवस्था है, जहाँ व्यक्ति अपनी सच्ची पहचान से साक्षात्कार करता है। प्राचीन काल से ही ऋषि-मुनि, योगी और सिद्ध पुरुष एकांत वनों, पर्वतों और गुफाओं में जाकर साधना करते थे। क्यों? क्योंकि एकांत में ही आत्मा की आवाज़ स्पष्ट सुनाई देती है। जब बाहरी शोर शांत होता है, तब भीतर की गहराइयां खुलती हैं। एकांत हमें अपने विचारों, भावनाओं और कर्मों का निरीक्षण करने का अवसर देता है। दिव्यता का अनुभव तभी होता है जब मन भीतर की ओर मुड़ता है। एकांत में बैठकर ध्यान करने से न केवल मानसिक शांति मिलती है, बल्कि जीवन की दिशा भी स्पष्ट होने लगती है। परंतु एकांत का अर्थ संसार से भागना नहीं है, बल्कि संसार में रहते हुए भी भीतर एक शांत केंद्र बनाए रखना है। यह भीड़ में रहकर भी भीतर मौन बने रहने की कला है। यही आत्मिक परिपक्वता है। एकांत हमें आत्म-संवाद सिखाता है और आत्म-संवाद ही ईश्वर-संवाद की शुरुआत है। आज, जब जीवन तेजी से चल रहा है, हर कोई व्यस्त है, ऐसे में कुछ पल का एकांत लेना आत्मा के लिए अमृत के समान है। हर दिन थोड़ी देर स्वयं के साथ बैठना, बिना किसी विकर्षण के, एक अद्भुत साधना बन सकती है। जब तक हम स्वयं एकांत में रहकर अपने अंदर नहीं झांकेंगे तब तक हम इसका महत्व और अनुभूति को गहराई से अनुभव नहीं कर सकते हैं।

बोध कथा/जीवन की सीख

कर्मों का मूल्य केवल बाहरी नहीं, उसकी भावना से होता है

प्राचीन भारत की बात है। दो साधु एक वृद्ध और ज्ञानी, दूसरा युवा और नवदीक्षित हिमालय की ओर तपस्या हेतु यात्रा पर निकले थे। दोनों ही एक पवित्र आश्रम से संबंध रखते थे और संयम, साधना तथा संन्यास के कठोर नियमों का पालन करते थे।

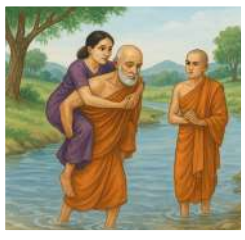

एक दिन, चलते-चलते वे एक नदी के किनारे पहुँचे। नदी में बाढ़ का असर था और धारा तेज बह रही थी। वहीं, किनारे पर एक सुन्दर युवती खड़ी थी, जो अत्यंत चिंतित और भयभीत दिख रही थी। उसने दोनों साधुओं से विनम्रता से कहा, 'हे तपस्वियो, क्या आप मेरी सहायता कर सकते हैं? मुझे इस नदी को पार करना है, लेकिन मुझे तैरना नहीं आता।'

युवा साधु इस अनुरोध से असहज हो गया। उसकी दीक्षा में स्पष्ट रूप से सिखाया गया था कि स्त्रियों से दूर रहना चाहिए, उनके संपर्क से बचना चाहिए। उसने एक कदम पीछे हटाते हुए सिर झुका लिया। परंतु वृद्ध साधु ने क्षणभर बिना कोई प्रश्न किए उस युवती को अपने हाथों में उठाया, नदी पार की और उसे सुरक्षित किनारे पर उतार दिया। फिर उसने कुछ नहीं कहा, न धन्यवाद मांगा, न उपदेश दिया — बस अपनी यात्रा में पुनः आगे बढ़ गया। युवा साधु चकित और भीतर से विचलित हो गया। वह पूरे रास्ते कुछ नहीं बोला, लेकिन उसके मन में उथल-पुथल चलती रही। दो कोस चलने के बाद वह रहा नहीं गया और बोला, 'गुरुदेव, आपने तो हमें सिखाया था कि स्त्रियों से दूर रहना चाहिए। फिर आपने उस स्त्री को अपने हाथों से क्यों उठाया? क्या आपने अपने ही व्रत का उल्लंघन नहीं किया?'

वृद्ध साधु मुस्कुराए, उनकी आंखों में शांति और करुणा थी। वे बोले, 'पुत्र, मैंने उस स्त्री को केवल नदी पार करवाने के लिए उठाया था और नदी पार करने के बाद उसे वहीं छोड़ दिया। पर लगता है, तुम अब तक उसे अपने मन में उठाए हुए हो।'

सीख: इससे हमें सीख मिलती है कि हमारे कर्मों का मूल्य केवल बाहरी रूप से नहीं, बल्कि उसकी आंतरिक भावना से होता है। यदि हमारा मन पवित्र है और कार्य सेवा, करुणा और निःस्वार्थता से प्रेरित है, तो वह कर्म शुद्ध है, भले ही वह बाहर से नियमों से भिन्न लगे। अक्सर हम जीवन में छोटी-छोटी बातों को अपने भीतर ढोते रहते हैं- अपराध-बोध, दूसरों की गलतियां, असहमति या अपमान और यह मानसिक भार हमें भीतर से कमजोर कर देता है। जबकि सच्चा साधक वही है जो हर अनुभव को समझकर, सीख लेकर, उसे छोड़कर आगे बढ़ जाए।

मेरी कलम से

ज्ञान का फाउंडेशन है 'निश्चय'

बी.के.रामसिंह, सुबेदार मेजर, रेवाड़ी (हरियाणा)

निश्चय-बुद्धि बन पुरुषार्थ करो तो मंजिल तक पहुंच जाएंगे। विद्या यानी ज्ञान जहां से भी ज्ञान मिले लेने में संकोच नहीं करना चाहिए। ज्ञान से हम अपने जीवन को नई दिशा दे सकते हैं। ज्ञान प्राप्त होने पर हमारे लिए कुछ भी पाना ज्यादा कठिन नहीं रह जाता। लेकिन इसके लिए जरूरी है कि उस ज्ञान को अपने चरित्र में उतरना अर्थात ज्ञान सिर्फ सुनने तक ही सीमित नहीं है, उसे अपने आचार, विचार, व्यवहार व जीवन में उतारने पर ही हम अपने लक्ष्य को आसानी से पा सकते हैं।

ज्ञान से अहंकार आना,जहर है: ज्ञान प्राप्त होने के बाद यदि अहंकार का जन्म होता है, तो वह ज्ञान जहर है। परंतु ज्ञान प्राप्त होने के बाद, नम्रता का जन्म होता है। ज्ञान सुनना, ज्ञान की बातें पसंद करना, ज्ञान की बातें सुनाना, यह कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन ज्ञान की बातों को जीवन में धारण करना यह बहुत बड़ी बात है। जब आपको दूसरों के लिए दर्द और कड़वी बोली से मन दुखी न होने लगे, तब समझ लेना कि आपके जीवन में ज्ञान की धारणा होने लगी है, तो बस आगे बढ़ते जाओ, समझो लक्ष्य के बहुत नजदीक हैं।

ज्ञान, धन से भी उत्तम है: ज्ञान, धन से भी उत्तम है क्योंकि धन की तो हमें स्वयं रक्षा करनी पड़ती है और ज्ञान हमारी रक्षा करता है। सबसे पहले व्यक्ति को ज्ञान चाहिए, अपनी ताकत का, अपने साहस का और विश्वास करने का। बिना समझ के ज्ञान बेकार है। हर चीज का अंत तय है - यह हमें ज्ञान सिखाता हैं। हम दुनिया को सिर्फ ज्ञान के बल पर समझने का दावा नहीं करना चाहिए क्योंकि ज्ञान की पहचान, सच्चाई का सिर्फ एक छोटा सा हिस्सा है। हमारी इच्छाओं से भी ज्यादा सुंदर, भगवान की योजनाएं होती हैं। अपने कर्म पर सदा विश्वास रखो, ईश्वर पर आस्था रखो, स्वयं ईमानदार रहो, फिर चाहे कोई भी मुश्किल वक्त आए तो भगवान जरूर रास्ता निकाल देता है।

ज्ञान का प्रकाश ही अज्ञान अंधेरे को दूर करता है: अंधेरे के ज्ञान में उलझा हुआ व्यक्ति, कभी प्रकाश के ज्ञान को, प्राप्त नहीं कर सकता। ज्यों-ज्यों ज्ञान का प्रकाश जीवन में आता जाता है, अज्ञान अंधेरा दूर होते चला जाता है अर्थात जैसे-जैसे व्यक्ति ज्ञान के प्रकाश के नजदीक पहुंच जाता है, तो वह संसार के झमेलों से भी दूर हो जाता है तथा अज्ञानता का अंधेरा आंखों से ओझल होने लगता है। ज्ञान का प्रकाश अर्थात आचार, विचार, व्यवहार में सुधार आना शुरू हो जाता है। इसके लिए व्यक्ति को चाहिए कि वह अपने खान-पान को शुद्ध रखें और व्यर्थ संकल्पों को त्याग कर सत्य मार्ग पर अग्रसर हो जाए। इससे मन भी निर्मल होता है और निर्मल होकर ही परमात्म आध्यात्मिक-ज्ञान व्यक्ति के भीतर ठहर सकता है।

ज्ञान के साथ विनम्रता जरूरी है: कहा जाता है - ध्यान से ज्ञान पैदा होता है और ध्यान के बिना ज्ञान खो जाता है। अज्ञान को ज्ञान से खत्म किया जा सकता है लेकिन मूर्खता हमेशा के लिए रहती है। थोड़ा सा ज्ञान जिसे प्रयोग में लाया जाए, वह बहुत सारा ज्ञान जो बेकार पड़ा है उससे कहीं अधिक मूल्यवान होता है। ज्ञान के पथ पर चलते हुए, अंत तक स्वयं को भटकाव से बचा लेना, सबसे बड़ी चतुराई और विशेषता है अर्थात अपने ज्ञान को लगातार बढ़ाना, आजमाना और चुनौति देना होता है, वरना यह गायब हो जाता है।

आत्मगत स्वभाव में सात्विक सुमति द्वारा नियम-संयम

जीवन का मनोविज्ञान

भाग - 82

- डॉ. अजय शुक्ला, बिहेवियर साइंटिस्ट
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशतनल, ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

आबूरोड, राजस्थान। आत्मगत नैसर्गिक चैतन्यता की अनुभूति में सदैव नियम और संयम के प्रति अगाध श्रद्धा का समावेश सन्निहित रहता है जिससे जीवात्मा का आध्यात्मिक पुरुषार्थ तीव्र हो जाता है क्योंकि आत्मा , आधारभूत - अवधारणा के निश्चयात्मक पक्ष से निश्चिंत रहकर गतिशील बनी रहती है । मानव जीवन के भीतर जब राजयोग रूपान्तरित होता है तब आत्मिक स्थिति में विशिष्ट परिवर्तन सुनिश्चित रूप से घटित होकर सृजनात्मक परिणाम के माध्यम से मंशा, वाचा एवं कर्मणा की पवित्रता द्वारा कल्याणकारी फलितार्थ के वास्तविक स्वरूप में प्रकट हो जाते हैं। आत्मा का स्वमान, स्वरूप और स्वभाव में सात्विक सुमति की विद्यमानता सदा बनी रहती है जिससे जीवन के व्यावहारिक परिदृश्य एवं परिवेश में चेतना की नैसर्गिक चैतन्यता उच्चतम् वैभवपूर्णता के सानिध्य में मंगलकारी स्वरूप द्वारा सर्वदा आत्मिक आनंद को प्रस्फुटित करती रहती हैं । "

परमात्म स्मृति से आत्मगत स्वभाव: आत्म तत्व के प्रति निष्ठावान मनःस्थिति जीवात्मा को सक्षम बनाने में सहायक होती है जिससे परम सत्ता की शरण में गतिशील बने रहना सहज हो जाता है जो सम्पूर्ण समर्पण का महत्वपूर्ण आधार है। जीवन में आत्मिक स्वभाव के सानिध्य में आत्मा का अस्तित्व गुण सदा बना रहता है जो-जो नियम-संयम द्वारा मर्यादित आचरण को अनुगमन करते हुए पूर्णतया आत्मनिर्भर रहकर कर्मजगत में प्रविष्ठ होता है। आत्मगत स्वभाव में सात्विक सुमति सन्निहित रहती जो जीवात्मा को सदा ही अनुप्राणित करती है जिससे सम्पूर्ण अभिव्यक्ति का केन्द्रिय भाव एवं विचार सर्व मानव आत्माओं की आत्मीयता का प्रमुख कारण बन जाता है। परमात्म स्मृति के माध्यम से आत्मा की महान स्थिति का निर्माण सुनिश्चित हो जाता है और आत्म चेतना की चैतन्यता स्वयं को आध्यात्मिक पुरुषार्थ की दिशा में अभिमुखित करके पवित्र अवस्था और स्वरूप के निर्माण में संलग्न हो जाती है । ईश्वरीय छत्रछाया की आत्मिक अनुभूतियाँ आत्मा के नैसर्गिक स्वभाव की सात्विक मनोदशा से समृद्धशाली होकर जीवन के विविध आयाम में स्वयं को पवित्रतम गति, मति, सुमति एवं सद्गति के व्यावहारिक क्रियमाण तथा परिणाम का संज्ञान प्राप्त करके ही नियम और संयम की उच्चता को आत्मसात कर अभिभूत होते हैं।

नैसर्गिक चैतन्यता में नियम,संयम: चेतना का नैसर्गिक स्वरूप आत्मगत स्वभाव के अनुकूल स्वयं को सदा गुणात्मक रूप से परिमार्जित - करने की दशा में सम्पूर्ण परिष्कृत हो जाने की अभिलाषा से गतिमान रहता है जिसमें कायदे में ही फायदा है का सिद्धान्त और व्यवहार जीवात्मा को मर्यादित आचरण से सुसज्जित कर देता है । जीवन में स्वयं को पूर्णतः नियमित करके संयमित जीवन शैली को अनुकरण एवं अनुसरण करने की मानवीय जिज्ञासु प्रवृत्ति ही धर्म और कर्म के सामन्जस्य को धारणात्मक स्वरूप में परिणित करने में सक्षम सिद्ध होती हैं । आत्मगत नैसर्गिक चैतन्यता की अनुभूति में सदैव नियम और संयम के प्रति अगाध श्रद्धा का समावेश सन्निहित रहता है जिससे जीवात्मा का आध्यात्मिक पुरुषार्थ तीव्र हो जाता है।

आत्मिक अस्तित्व द्वारा सात्विक सुमति

जीवन में आत्मिक अस्तित्व और आत्मा से सम्बन्धित दिव्य गुण एवं शक्ति की अनुभूति युक्त निश्चयात्मक स्वीकारोक्ति जीवात्मा के आध्यात्मिक पुरुषार्थ का मूलभूत केन्द्र होता है जहाँ से सात्विक सुमति की और गतिशीलता स्वमेव आरम्भ हो जाती है। स्वयं की विराटता को आत्मगत चेतना द्वारा जब विशालता के साथ आत्मिक अस्तित्व की बोधगम्यता के माध्यम से परमात्म सत्ता के सम्मुख निजता को न्यौछावर करके मनुष्य जीवन के प्रति सतोप्रधान मनोवृत्ति को आत्मसात किया जाता है तब सात्विकता के परिवेश से सर्व मानव आत्माएँ आलोकित हो पाती है। आत्मिक अनुभूतियों से भरपूर चेतना विभिन्न कार्य दशाओं के अन्तर्गत स्वयं की उपस्थिति को स्वरूपगत बनाये रखती है जिससे कर्मजगत का परिदृश्य गुणात्मकता की अनिवार्यता से पूर्णतः संतुष्ट हो जाता है और जिसमें आत्म संतुष्टि की अवधारणा सम्पूर्ण क्रियान्वयन की पक्षधरता को सहर्ष ही अनुकरण कर लेती है। चेतना के नैसर्गिक स्वरूप के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाने की आत्मिक चेष्ठा - व्यक्तित्व, कृतित्व एवं अस्तित्व को परिमार्जित करके सम्पूर्ण रूप से परिष्कृत कर देती है जिसके परिणाम स्वरूप मानवीय चित्र की सार्थकता को यथासमय सामाजिक परिदृश्य में परिलक्षित होते हुए अनुभव किया जा सकता है। आत्मिक अस्तित्व गुण द्वारा सात्विक प्रवृत्ति से सुमति की प्राप्ति हो जाने के कारण मानवीय चेतना को जीवन के सिद्धान्त एवं व्यवहार में साम्य स्थापित करके नियमानुसार आचरण का अनुसरण करना अनिवार्य होता है जिससे अहिंसक जीवन शैली के सानिध्य में संयमित जीवन शैली की उपयोगिता को सहज ही सिद्ध किया जा सकता है ।

"जब तक जीना, तब तक सीखना। अनुभव ही जीवन का सर्वोत्तम शिक्षक है।"

- स्वामी विवेकानंद

"सच्चा धर्म वही है जो मन को शुद्ध करे और सभी में एकता का भाव पैदा करे।"

- संत रविदास

आत्मा का परमात्मा के साथ मिलन ही सच्चा योग हैः बीके सविता दीदी

योग आयोग के नवनियुक्त अध्यक्ष के शपथ ग्रहण समारोह में लिया भाग

शिव आमंत्रण, रायपुर,छग। छत्तीसगढ़ योग आयोग के नवनियुक्त अध्यक्ष रूप नारायण सिन्हा के शपथ ग्रहण समारोह में राज्य के अनेक प्रतिष्ठित आध्यात्मिक संगठनों के साथ प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के भाई-बहनों ने भी बड़ी संख्या में हिस्सा लिया।

विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित रायपुर संचालिका बीके सविता दीदी ने कहा कि योग शब्द का अर्थ होता है जोड़ना। अध्यात्म के सन्दर्भ में आत्मा का सम्बन्ध परमात्मा से जोड़ना ही सच्चा योग है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए आसन या प्राणायाम जरूरी हो सकते हैं लेकिन काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि विकारों पर जीत पाने और मन को तनाव मुक्त रखने के लिए राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास की आवश्यकता है। जैसे बैटरी को चार्ज करने के लिए पावर हाउस से सम्बन्ध जोड़ने की आवश्यकता होती है। ठीक वैसे ही आत्मा में शक्ति भरने के लिए उसका सम्बन्ध परमात्मा के साथ जोड़ने की जरूरत होती है। उन्होंने नकारात्मक और व्यर्थ विचारों से बचने की सलाह देते हुए कहा कि इससे आत्मा की शक्ति नष्ट होती है। राजयोग हमें सकारात्मक सोच बनाने में मदद करता है। मन की शान्ति के लिए मेडिटेशन के अलावा अन्य कोई दूसरा उपाय नहीं है। अन्त में उन्होंने सभा में उपस्थित लोगों को राजयोग का व्यावहारिक अभ्यास भी कराया। साथ ही राजयोग से सभी को शांति की अनुभूति कराई। इस दौरान मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के साथ महाराष्ट्र के पूर्व राज्यपाल रमेश बैस, महिला एवं बाल विकास मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े, युवा खेलकूद और राजस्व मंत्री टंकराम वर्मा सहित अनेक विधायक, सन्त महात्मा व सामाजिक कार्यकर्ता और ब्रह्माकुमार भाई-बहनों ने भाग लिया।

सर्वश्रेष्ठ प्रेरणादायक फिल्म गीत के रूप में सम्मानित

शिव आमंत्रण, नासिक, महाराष्ट्र। नासिक फिल्म फेस्टीवल में फ्लाइट प्लेस-द लाइट फ़िल्म के प्रेरणादायक गीत को 13वें दादा साहेब फाल्के जन्मभूमि पुरस्कार (द गोल्डन कैमरा) 2025 में सर्वश्रेष्ठ प्रेरणादायक फ़िल्म गीत के रूप में सम्मानित किया गया है। साथ ही द लाइट फिल्म ने नासिक इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में 2025 में सर्वश्रेष्ठ एनिमेटेड फीचर फिल्म का प्रतिष्ठित पुरस्कार भी जीता है। इससे पहले, यह फिल्म गोवा इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल 2024, खजुराहो इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल 2024, और राजस्थान इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल 2025 में अवॉर्ड जीत कर अपनी खास पहचान बना चुकी है। दूरदर्शन निर्माता शूजीत सरकार और गॉडवुड स्टूडियो की पूरी टीम की कड़ी मेहनत, अभिनय और सृजनात्मकता के कारण यह संभव हो सका है। फेस्टिवल में बी.के. वासंती दीदी (नासिक सेंटर मेक्सिको), बीके शिखा बहन विशेष रूप से मौजूद रहीं।

महामहिम बहनजी फिल्म को दादा साहब फाल्के पुरस्कार

नासिक। प्रतिष्ठित दादा साहेब फाल्के पुरस्कार 2025 में, फिल्म महामहिम दीदीजी को सर्वश्रेष्ठ फिल्म के रूप में सम्मानित किया गया। यह फिल्म ओम शांति शांति प्रोडक्शन के बैनर तले बनी है। इस अवसर पर सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का पुरस्कार बीके पंपोश मिश्रा को प्रदान किया गया। जबकि सर्वश्रेष्ठ निर्माता का खिताब बीके प्रभा मिश्रा को दिया गया। सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार संपा मंडल (बंगाल) को उनकी बेहतरीन अदाकारी के लिए मिला। इस सम्मान समारोह में महाराष्ट्र के शिक्षा मंत्री दादाजी भुसे मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे और उन्होंने पुरस्कार प्रदान किया। यह सम्मान भारतीय सिनेमा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धि है और कला प्रेमियों के लिए गौरव का विषय है। इस फिल्म ने समाज में जागरूकता और आध्यात्मिक संदेश देने का काम किया है, जिसे दर्शकों ने बहुत पसंद किया है। यह पुरस्कार पूरी टीम के कठिन परिश्रम और पुरस्कार का प्रमाण है।

इंदौर। ब्रह्माकुमारीज के जोनल मुख्यालय ज्ञान शिखर में युवा प्रभाग द्वारा विशेष युवाओं के लिए 'कॉल ऑफ टाइम- इंटरनेट टू इनर नेट' विषय पर प्रेरणादाई कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें युवा प्रभाग की राष्ट्रीय उपाध्यक्षा राजयोगिनी चंदिका दीदी, रेनेसा यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. स्वप्निल कोठारी, इंदौर जोन की क्षेत्रीय निदेशिका ब्रह्माकुमारी हेमलता दीदी, सुप्रसिद्ध माइंड ट्रेनर एवं मोटिवेशनल स्पीकर डॉ. शक्तिराज सिंह, प्रभाग की सदस्य बीके डॉ. गीता बहन, मुख्यालय संयोजक बीके आत्मप्रकाश भाई, कस्टम विभाग के अपर आयुक्त दिनेश बिसेन, भाजपा युवा मोर्चा के नगर अध्यक्ष सौगात मिश्रा ने अतिथि के रूप में भाग लिया। साथ ही प्रभाग की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक आयोजित की गई। जिसमें देशभर से प्रभाग से जुड़े पदाधिकारियों ने भाग लिया।

मौदा में स्वास्थ जागृति आध्यात्मिक मेले का आयोजन

मौदा, महाराष्ट्र। सेवाकेंद्र द्वारा स्वास्थ जागृति आध्यात्मिक मेले का आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न विषयों पर संगोष्टियां आयोजित की गई। जिसका उदघाटन नागपुर क्षेत्र की संचालिका राजयोगिनी रजनी दीदी ने किया। उन्होंने कहा कि यह मेला सभी के जीवन में सुख-शांति, समृद्धि लाने वाला है। जीवन में हर इंसान को हर प्रकार की प्राप्ति कराने वाला है। 12 ज्योर्तिलिंग दर्शन चरित्र निर्माण प्रदर्शनी, वेलनेस, कुंभकर्ण झांकी, सकारात्मक स्वास्थ प्रदर्शनी, सहस्त्र शिवलिंग दर्शन, मेडीटेशन रूम, साहित्य कक्ष, आने वाली दुनिया का दर्शन कराने वाली सुंदर झांकी स्वर्णिम भारत, वैल्यु गेम, यौगिक खेती, व्यापार प्रदर्शनी, श्रीडी शो रखा गया था। इस मौके पर मोरेश्वर सोरते, मौदा शहर अध्यक्ष भाजपा, डॉसावरकर, डॉ आमिलडूके, प्रमुख रूप से ज्ञान गंगा कॉन्वेंट की प्रिंसीपल बोबडे उपस्थित रहे। दूसरे दिन जादू के प्रयोग रखे गए थे। प्रशांत भावसार ने लोगों को जादू के प्रयोग द्वारा अंधश्रद्धा निर्मूलन का कार्य किया।

तीसरे दिन विशेष किसान भाईयों के लिये सम्मेलन था। कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग की सक्रिय सदस्य बीके प्रेमलता दीदी ने किसानों को मार्गदर्शन करते हुए स्वस्थ धरती समृद्ध किसान इस विषय पर संबोधित किया।

मधुबन न्यूज़ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ट्रेनिंग 2 जुलाई से

शिव आमंत्रण, आबूरोड। तेजी से आधुनिक तकनीक के उपयोग और सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल होने वाली खबरों की पड़ताल, मधुबन न्यूज रिपोर्टर्स और मीडिया सेवा करने वाले भाई-बहनों के लिए 2 से 6 जुलाई 2025 तक शांतिवन के मनमोहिनीवन ग्लोबल ऑडिटोरियम में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ट्रेनिंग का आयोजन किया गया है। यह प्रशिक्षण देश के प्रसिद्ध न्यूज चैनलों के वरिष्ठ और विशेषज्ञों द्वारा दिया जाएगा।

इस ट्रेनिंग में न्यूज पब्लिशिंग, ब्रेकिंग न्यूज, एंकरिंग, इंटरव्यू, न्यूज पोस्टिंग, वीडियो सूटिंग, कैमरा हैंडलिंग, स्पेशल स्टोरी, लाइव डिस्प्ले, ग्राउंड रिपोर्टिंग, मधुबन न्यूज में न्यूज बिजनेस की विधि, सोशाल मीडिया हैंडलिंग (फेसबुक, व्हाट्सएप, एक्सएक्स, लिंकेडिन) आदि चैनलों पर बड़े पैमाने पर और पुराने बिजनेस द्वारा विशेष प्रशिक्षण और प्रैक्टिकल डिजाइन शामिल हैं। इस बार विशेष रूप से आर्टिफिशियल एंकर, वायरल फोटो और वीडियो के बारे में सही जानकारी और निषेध के उपाय पर भी प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस प्रशिक्षण से सेवक के भाईचारे को बाहरी समाचार चैनलों में भी संस्थान का समाचार कैसा लगता है, आदि की सेवा करने में कैसे ब्रेकिंग चालनी मदद मिलेगी। ट्रेनिंग में आने वाले भाई बहनों को मधुबन न्यूज का प्रेस कार्ड, चैनल का माइक भी दिया गया।

ट्रेनिंग में आने के लिए accomabu.bkinfo.in/ accomabu.bkapp.org पर नामांकन करा सकते हैं।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें...

मधुबन न्यूज़ ऑफिस, पीएम पार्क, तलहटी, आबू रोड, राज.
मो. 9414089666, 6376767376, 8003678111

आलीराजपुर। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव को केबिनेट मंत्री नागर सिंह चौहान के साथ सेवाकेंद्र प्रभारी बीके माधुरी दीदी ने ईश्वरीय सौगात प्रदान की।

जिंदगी बने आसान कार्यक्रम आयोजित

जहां आशा है, वहां रास्ते हैं, जहां प्रेम है, वहां सृजन हैः बीके ऊषा दीदी

शिव आमंत्रण, लखनऊ, उप्र। ब्रह्माकुमारीज़ दिव्य शक्ति भवन द्वारा स्कोडा के राजकमल पैलेस, छाया क्रैकोड में जिंदगी बने आसान... चलें समस्याओं के समाधान की ओर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें इंटरनेशनल स्पीकर राजयोगिनी बीके ऊषा दीदी ने जीवन प्रबंधन, आत्म-उन्नति और सकारात्मक सोच के टिप्स बताए। कार्यक्रम में एक हजार से अधिक लोगों ने भाग लिया। ऊषा दीदी ने कहा कि जहां आशा है, वहां रास्ते हैं, जहां प्रेम है, वहां सृजन है और जहां सेवा है, वहां समाज का प्रचार है।

अतिथि के रूप में भाजपा अध्यक्ष अरविंद मौर्य, डॉ. रामकुमारी मौर्य, अंतरराष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन के प्रदेश उपाध्यक्ष पंकज गुप्ता पंकी, देहरादून के डीआईजी सुशील पांडे, अखिल भारतीय लघु समाचार पत्र संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष शिवशंकर त्रिमूर्ति, मजिस्ट्रेट डॉ. इंक्रीमेंट पांडे, पं. समिति स्ट्रॉबेरी जिला उपाध्यक्ष राम स्वरूप यादव, महिला मोर्चा भाजपा उपाध्यक्ष रचनाकार, स्ट्रॉबेरी आरएसएस के संघचालक आरएस गुप्ता सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

जिला न्यायाधीश पंकज कुमार सिंह के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त किया गया। उनकी स्मृति में दो मिनट का मौन धारण किया गया। कार्यक्रम में नोएडा से पधारीं राजयोगिनी दिव्या दीदी ने भी अपने जीवन के सुंदर अनुभव और विचार व्यक्त किए। बालिकाओं द्वारा सुंदर सांस्कृतिक प्रस्तुति दी गई, जिसे देखकर सभी मंत्रमुग्ध हो गए।

आध्यात्मिकता प्रकट करती है जीवन के प्रति एक उच्च दृष्टिकोण

व्यापारियों एवं उद्यमियों के लिए राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित

शिव आमंत्रण, गुरुग्राम। ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शांति रिट्रीट सेंटर में संस्था के व्यापार एवं उद्योग प्रभाग द्वारा तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। दादी प्रकाशमणी सभागार में व्यापार के लिए आध्यात्मिक समाधान विषय पर आयोजित इस सम्मेलन में एक हजार से अधिक व्यापार जगत की हस्तियों ने भाग लिया।

कॉरपोरेट मामलों के मंत्रालय की संयुक्त सचिव अनीता शाह अकेला ने कहा कि आध्यात्मिकता का सम्बन्ध किसी धर्म से नहीं बल्कि जीवन के प्रति उच्च दृष्टिकोण से है। एक अच्छा व्यवसाय वही है जिसमें आर्थिक उन्नति के साथ नैतिक मूल्यों का भी समावेश हो। ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी आशा दीदी ने कहा कि धन कमाना बड़ी बात नहीं है लेकिन दुआएं कमाना बड़ी बात है। धन कमाने के पीछे विशेष लक्ष्य का होना आवश्यक है। सबसे बड़ा लक्ष्य सबको सुख देना है। समाज को सुख देने का कार्य एक व्यापारी ही कर सकता है। किसी भी कार्य में निमित भाव जरूरी है। क्योंकि निमित्त भाव से ही व्यक्ति निर्मान और नम्र बनता है। इन सबके लिए आध्यात्मिकता सबसे महत्वपूर्ण है। जिस प्रकार शरीर के लिए भोजन जरूरी है। ठीक उसी प्रकार आत्मिक चेतना के लिए धर्म, श्रेष्ठ कर्म और आध्यात्मिकता का भोजन आवश्यक है।

मॉर्गन स्टेनली इन्वेस्टमेंट बैंकिंग के अध्यक्ष विष्णु बंसल ने कहा कि वर्तमान परिदृश्य में आध्यात्मिक मूल्यों की सबसे अधिक जरूरत है। धन कमाने के साथ-साथ श्रेष्ठ कर्मों पर ध्यान देना सबसे जरूरी है। आईएफएम ग्रुप के अध्यक्ष एवं संस्थापक इकबाल सिंह ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ आध्यात्मिकता की प्रयोगशाला है। यहां पर हर व्यक्ति अपने प्रैक्टिकल जीवन से सबको एक दिव्य संदेश दे रहा है। फरीदाबाद से राजयोगिनी ऊषा दीदी, बहादुरगढ़ सेवाकेंद्र प्रभारी बीके अंजली, मुंबई से आए प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक बीके हरेश, बीके सुरेंद्र, बीके ख्याति एवं बीके दिव्या ने भी संबोधित किया।

कर्म के साथ योग-साधना और सकारात्मक सोच से ही जीवन सफल हो सकता है: शिव किशन अग्रवाल

सुरक्षा सेवा प्रभागः राजस्थान में चलाया जा रहा है आत्मसंतुष्टि से राष्ट्र संरक्षण अभियान

शिव आमंत्रण, बीकानेर, राजस्थान। ब्रह्माकुमारीज़ के सुरक्षा सेवा प्रभाग की ओर से सार्दुलगंज सेवाकेंद्र पर आत्मसंतुष्टि से राष्ट्र संरक्षण अभियान के तहत कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें पुलिस, रेलवे पुलिस, सैन्य बल, आरएससी आपदा प्रबंधन और अन्य सुरक्षा से जुड़े करीब 400 अधिकारी और कर्मचारी शामिल हुए।

हल्दीराम समूह नागपुर के प्रमुख शिव किशन अग्रवाल ने कहा कि कर्म के साथ योग साधना, सकारात्मक सोच से ही जीवन सफल हो सकता है। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सुखविन्द्र पाल सिंह ने कहा कि मानसिक तनाव को दूर करने के लिए इस प्रकार के धर्म-आध्यात्मिक एवं योग के कार्यक्रम में सार्थकता एवं प्रेरणा प्रदान की जाती है। रेलवे पुलिस बल के कमांडेंट संजय पीसे ने कहा कि सुरक्षाकर्मी तनावमुक्त रहकर ही अपने दायित्वों का सही संतुलन कर सकते हैं। बीकाजी समूह के प्रमुख शिव रतन अग्रवाल, सुशीला अग्रवाल ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

सेवाकेंद्र संचालिका राजयोगिनी बीके कमल दीदी ने बताया कि सुरक्षा दल राजस्थान की सुरक्षा समिति द्वारा राष्ट्र समर्पण अभियान 16 से 30 मार्च, 2025 तक राजस्थान के विभिन्न स्थानों पर आयोजित किया जा रहा है। सुरक्षा प्रभाग के विशेषज्ञ, वक्ता पूना के दत्ता भाई, बालोतरा की बीके अस्मिता दीदी, दिल्ली की प्रियंका दीदी, कमल भाई ने तनाव कम करने के सूत्र बताए तथा राजयोग का अभ्यास करवाया।

वक्ताओं ने सुरक्षा कर्मियों को तनाव कम करने, खुशहाल जीवन जीवन जीने, मोबाईल व अन्य संचार माध्यमों में फालतू समय खर्च नहीं करने, सकारात्मक सोच, रखने की सलाह दी। सुरक्षा कार्मिकों से संवाद किया और तनावमुक्त करने के टिप्स बताए। मधुबन के प्रमुख वक्ता हेम सिंह भाई, हितेश भाई, शांतिवन के वीरेन्द्र भाई ने भी भागीदारी निभाई। बीके कमल दीदी ने अतिथियों को स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए कहा कि राजयोग के प्रशिक्षण व नियमित ध्यान व योग से हम तनाव से मुक्त होकर शांतिमय जीवन जी सकते है। सार्दुल गंज स्थित केन्द्र में निःशुल्क नियमित राजयोग का अभ्यास करवाया जाता है। सभी ने आध्यात्मिक संग्रहालय देखा और सराहना की।

मुश्किलों को प्रभु अर्पण करने से मुश्किल हो जाएगी: मंजू दीदी

शिव आमंत्रण, बिलासपुर, छग। अपना हर कार्य ईश्वर के साथ व आपसी एकता से करने से कार्य में उत्कृष्टता आएगी व ब्लिसफूल बन जाएगा। आदर्श पार्षद का जीवन व्यसनमुक्त व सात्विक हो तो विकास कार्य में सफलता मिलेगी।

ये बातें शिव-अनुराग भवन में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा नवनिर्वाचित महापौर पूजा विधानी एवं सभी वार्ड पार्षदों के लिए आयोजित सम्मान समारोह को सम्बोधित करते हुए सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके मंजू दीदी ने कही। दीदी ने सभी को हिन्दू नववर्ष, गुड़ी पाड़वा व चेट्री चण्ड्र की अग्रिम शुभकामनाएं देते हुए माउण्ट आबू का निमंत्रण दिया।

महापौर पूजा विधानी ने कहा कि ब्रह्माकुमारी बहनों का स्नेह सदा मिलता रहता है। बहनें हर क्षेत्र में सेवा के लिए तत्पर रहती हैं। नशा बिलासपुर के साथ पूरे देश के लिए अभिशाप है। नशामुक्ति के लिए संस्था द्वारा जागरूकता लाई जा रही है। संस्था के साथ-साथ हमारी भी जिम्मेदारी है कि आप और हम भी अपने आस पड़ोस के लोगों को नशे से मुक्त करने की प्रेरणा दें। हम प्रयास करें सभी को बताने का कि नशा हमारे शरीर, परिवार व समाज के लिए कितना घातक है।

समाज कल्याण विभाग के सहायक सांख्यिकी अधिकारी प्रशांत मुकासे ने कहा ये सप्ताह भर विभिन्न स्थानों पर नशा मुक्ति जागरूकता अभियान चल रहे हैं। जिसमें आज का यह कार्यक्रम वृहद स्तर पर आयोजित है। जबसे योग दिवस की शुरुआत हुई है तब से ही दीदी के साथ सेवाओं के बहुत अच्छे अनुभव हुए हैं। अनेक माध्यमों से नशा मुक्ति के लिए समाज कल्याण विभाग प्रयास कर रहा है। कुमारी युक्ता एवं गौरी बहन ने स्वागत नृत्य प्रस्तुत कर सभी का स्वागत किया।

पठानकोट में जल दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

पठानकोट, पंजाब। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय सेवाकेंद्र पर जल दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में बीके ईशा दीदी, सुजानपुर सेंटर की प्रभारी बीके गीता दीदी, जिला कोर्डिनेटर बीके प्रताप भाई, बीके सत्या दीदी ने संबोधित करते हुए राजयोग मेडिटेशन के फायदे बताए। इस मौके पर अतिथि के रूप में जिला प्रमुख नरेश महाजन, पूर्व एक्सईएन रंजीत सागर डैम, सुप्रसिद कलाकार सुरेश मनचंदा सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

आगराः भाग्य की कलम आपके हाथ में है विषय पर मोटिवेशनल कार्यक्रम का आयोजन, शिवानी दीदी को सुनने बड़ी संख्या में पहुंचे लोग

आपका भाग्य आपके कर्म और फैसलों पर निर्भर करता हैः शिवानी दीदी

शिव आमंत्रण, आगरा, उप्र।

फतेहाबाद रोड स्थित एसएनजे गोल्ड में ब्रह्माकुमारीज गैलरी ऑफ स्प्रीचुअल एंड विजडम व रोटरी क्लब आगरा ग्रेस द्वारा भाग्य की कलम आपके हाथ में है विषय पर मोटिवेशनल कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

मुख्य वक्ता प्रेरक वक्ता बीके शिवानी दीदी ने कहा कि आपका भाग्य आपके कर्म और फैसलों पर निर्भर करता है। भाग्य की कलम आपके हाथ में है का अर्थ है कि आप अपनी जिंदगी की कहानी खुद लिख सकते हैं। जीवन में क्या करना है, यह निर्णय आपके हाथ में है। आपके कर्मों का आपके जीवन पर सीधा असर पड़ता है। हमारा भाग्य हमारे कर्मों और फैसलों पर निर्भर करता है। सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना जीवन को सरल और शांतिपूर्ण बनाता है। हमारे विचार, शब्द और व्यवहार का सीधा प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ता है। यदि हम कड़वाहट या नकारात्मकता से दूर रहकर दूसरों से अच्छे व्यवहार करते हैं, तो वही सकारात्मक ऊर्जा हमारे पास लौटकर आती है।

बीके शिवानी दीदी ने कहा कि मेडिटेशन और आध्यात्मिक साधना से हम अपनी आंतरिक शक्ति को पहचान सकते हैं, जिससे मानसिक शांति और आत्मविश्वास बढ़ता है। रात को सोने से पहले 15 मिनट अपने मन को शांत करने के लिए समय निकालें। हमारे अच्छे कर्मों का पुण्य हमें ही मिलता है और हम जो भी करते हैं वह हमारे भाग्य का निर्माण करता है। कर्मों में दिखावा नहीं करना चाहिए, क्योंकि दान की सबसे महत्वपूर्ण बात उसकी भावना होती है, न कि बाहरी प्रदर्शन। ईश्वर किसी का भाग्य खराब नहीं लिखता है। हमारी समस्याएं और कठिनाइयां हमारे पिछले कर्मों का परिणाम होती हैं और भगवान हमें उन गलतियों को सुधारने का अवसर देता है। अगर हमें यह पता हो कि हमारा अगला क्षण आखिरी हो सकता है, तो हमें तुरंत अपनी गलतियों के लिए माफी मांगकर अपनी शुरुआत करनी चाहिए। जीवन में सुधार और सही दिशा में चलने का समय अब है।

उत्तर प्रदेश महिला आयोग की अध्यक्ष बबिता चौहान, महापौर हेमलता दिवाकर, डॉ. बबीता सिंह, डॉ. रंजना बंसल, डॉ. नरेंद्र मल्होत्रा, पूरन डावर, जितेंद्र चौहान, संस्थापक अध्यक्ष डॉ. जयदीप मल्होत्रा, सचिव आशु मित्तल और बीके मधु दीदी ने दीप प्रज्ज्वलित करके कार्यक्रम का शुभारंभ किया। शुरुआत में राजयोगिनी दादी जानकी को श्रद्धांजली अर्पित करते हुए उन्हें याद किया। इसके बाद कालंदी इंस्टीट्यूट के बच्चों द्वारा एक स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया गया। इस मौके पर बीके माला बहन, बीके दर्शना बहन, बीके ममता बहन, बीके संगीता बहन विशेष रूप से मौजूद रहीं।

जोनल निदेशिका बीके हेमलता दीदी इंदौरी रत्न से सम्मानित

इंदौर, मप्र। न्यू पलासिया स्थित ज्ञान शिखर इंदौर जोन की क्षेत्रीय निदेशिका ब्रह्माकुमारी हेमलता दीदी को उनकी सद्भावना, समर्पण, श्रेष्ठता और समाज सेवा के प्रति प्रतिबद्धता के लिए संस्था इंदौरियंस द्वारा मध्यप्रदेश का प्रतिष्ठित सम्मान इंदौरी रत्न से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान मुंबई से पधारीं मिस इंडिया 2016 एवं मिस ग्लोब डिपल पटेल, संस्था इंदौरियंस के अध्यक्ष रवि गुप्ता, उमा त्रिवेदी, डेली कॉलेज की प्राचार्य सोनल सिसोदिया ने प्रदान किया। इस दौरान ब्रह्माकुमारी अनीता दीदी, ब्रह्माकुमारी उषा दीदी भी मौजूद रहीं।

दिव्यांग सेवा के लिए एसबीआई ने प्रदान की गाड़ी

शिव आमंत्रण, आबूरोड, राज.। निःशक्तजन और दिव्यांगों की सेवा के लिए एसबीआई ने एक ट्रेवलर गाड़ी प्रदान की है। इसके माध्यम से दिव्यांगों के कल्याण के लिए देशव्यापी अभियान चलाया जाएगा। उन्हें धर्म, संस्कृति, अध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन की शिक्षा के साथ जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया जाएगा। राजयोग एजुकेशन एवं रिसर्च फाउंडेशन के तहत संचालित दिव्यांग सेवा के लिए 13 सीटर फोर्स ट्रेवलर गाड़ी स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के क्षेत्रीय व्यवसाय कार्यालय सिरोही द्वारा कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) के अंतर्गत प्रदान की गई। शांतिवन में आयोजित शुभारंभ कार्यक्रम के दौरान एसबीआई प्रशासनिक कार्यालय उदयपुर के उपमहाप्रबंधक शशिनाथ मिश्र ने कहा कि दिव्यांगों की सेवा के लिए यह गाड़ी सौंपते हुए बहुत खुशी हो रही है। संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी दीदी ने गाड़ी का शुभारंभ किया। इस दौरान अतिरिक्त महासचिव बीके करुणा भाई, सीए बीके ललित भाई, दिव्यांग सेवा के बीके सूर्यमणि भाई, एसबीआई के क्षेत्रीय प्रबंधक मनीष भारद्वाज, सहायक महाप्रबंधक श्रीनिवासन, परिचालन प्रबंधक ललित शर्मा, शांतिवन शाखा प्रबंधक नीतू चौधरी, पीआरओ बीके कोमल भाई व अन्य मौजूद रहे।

एआईसीटीई मुख्यालय में कार्यक्रम आयोजित

शिव आमंत्रण, हरी नगर, नई दिल्ली।

ब्रह्माकुमारीज़ के हरिनगर सेवाकेंद्र द्वारा एआईसीटीई मुख्यालय सभागार नई दिल्ली इंटीग्रिटी स्पिरिटैलिटी इन इलेक्ट्रानिक एजुकेशन-द नीड ऑफ द ऑवर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें देशभर से 400 से अधिक वाइस चांसलर, डायरेक्टर्स, प्रोफेसर्स और अनेक कॉलेज के वैज्ञानिक शामिल हुए।

इसमें मुख्य वक्ता के रूप में पधारीं प्रेरक वक्ता बीके शिवानी दीदी ने मूल्य निष्ठ शिक्षा और आध्यात्मिक शिक्षा को बढ़ाने देने पर जोर दिया। साथ ही विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति मजबूत करने, आत्म विश्वास जगाने के लिए शिक्षा व पाठ्यक्रम में प्रेरक बातें शामिल करने की बात कही। एआईसीटीई चेयरमैन प्रो. टीजी सिताराम, यूजीसी फॉर्मर प्रो. डीपी सिंह, बीके पूनम दीदी, बीके नेहा दीदी सहित बड़ी संख्या में शिक्षाविद् मौजूद रहे।

खुशहाल महिला, खुशहाल परिवार

बिजावर, छतरपुर, मप्र। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय बिजावर के सेवाकेंद्र द्वारा पनागर में खुशहाल महिला-खुशहाल परिवार कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें सेवाकेंद्र प्रभारी बीके प्रति बहन ने आध्यात्मिक सशक्तिकरण द्वारा स्वयं को सशक्त बनाने हेतु जागरूक किया। उन्होंने कहा कि अध्यात्म द्वारा ही नारी में छुपी हुई शक्तियां उजागर होती है और असंभव कार्य को भी संभव करने की शक्ति अध्यात्म द्वारा ही संभव है। अपने अधिकारों और समाज में कर्तव्यों का बोध भी आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा संभव है। सभी महिलाओं को स्वयं के प्रति जागृति हेतु प्रतिज्ञा भी कराई गई।

स्वर्णिम प्रशासन मप्र जागृति अभियान का समापन

25 जिलों में 210 कार्यक्रम आयोजित

शिव आमंत्रण, भोपाल, मप्र।

ब्रह्माकुमारीज़ के जोनल मुख्यालय राजयोग भवन एवं प्रशासक सेवा प्रभाग द्वारा प्रशासकों, प्रबंधकों और कार्यपालकों के लिए राज्य स्तरीय स्वर्णिम प्रशासन मध्य प्रदेश जागृति अभियान चलाया गया। अभियान के तहत 25 जिलों में 210 कार्यक्रमों से 40 हजार से अधिक अधिकारी-कर्मचारियों को मन प्रबंधन द्वारा श्रेष्ठ प्रशासन की कला बताई गई।

बता दें कि अभियान का शुभारंभ राजयोग भवन में राज्यपाल मंगू भाई पटेल ने किया था। समापन समारोह में मप्र विस के प्रमुख सचिव अवधेश प्रताप सिंह, जनगणना कार्य निदेशालय की निदेशक भावना वालिम्बे, पुलिस आयुक्त हरिनारायणाचारी, जोनल निदेशिका बीके अवधेश दीदी, प्रभाग के मुख्यालय संयोजक बीके हरीश भाई, छतरपुर की निदेशिका बीके शैलजा दीदी, ब्लेसिंग हाउस की निदेशिका व अभियान प्रभारी डॉ. बीके रीना दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

देवबंद (उप्र)। खुशी और ध्यान पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन लोक निर्माण मंत्री बृजेश सिंह, नगर पालिका परिषद अध्यक्ष विपिन गर्ग, मोटिवेशनल स्पीकर बीके ओंकार, बीके संगीता दीदी और बीके पारुल दीदी द्वारा किया गया।

सुप्रसिद्ध गुरु व फिल्म अभिनेत्री सहयोगी देवी का किया सम्मान

रोसड़ा, बिहार। सुप्रसिद्ध गुरु व फिल्म अभिनेत्री सहयोगी देवी के ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पहुंचने पर प्रभारी ब्रह्माकुमारी कैटरीना दीदी ने माला-शॉल पहनाकर स्वागत किया। साथ ही परमात्म ज्ञान चर्चा कर माउंट आबू आने के लिए नियंत्रण दिया। साथ ही परमात्मा का स्मृति चिह्न भेंटकर सम्मान किया।

राजयोग मेडिटेशन से मिलती है मानसिक शांति और आत्मिक बल

भिलाई,छग। ब्रह्माकुमारीज़ कुटेला भट्ठा एवं करंजा द्वारा भिलाई गांव में विशेष राजयोग मेडिटेशन शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें ब्रह्माकुमारी इंद्राणी दीदी ने कहा कि राजयोग ध्यान से आध्यात्मिक बल, मानसिक शांति और नैतिक शिक्षा मिलती है। जब किसी व्यक्ति का स्वयं में सुधार होता है, तो पूर्ण समाज का स्वभाव बदल जाता है। ब्रह्माकुमारी गायत्री ने गोकुल गांव के बारे में बताया कि जहां बुराइयां हैं, व्यसनों का स्थान नहीं होगा, वो गोकुल गांव बनने के पथ पर हमारा पहला कदम होगा। ब्रह्माकुमारी गुड़िया ने राजयोग के माध्यम से सभी को शांति और शक्ति की अनुभूति कराई।

संकल्प करें कि परिवार में कोई भी नशा न करे: एएसपी

अंबिकापुर, छग। नवा बिहान नशामुक्ति जागरूकता अभियान एवं ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र के संयुक्त तत्वावधान में दरिमा में कार्यक्रम आयोजित किया गया। एसपी योगेश पटेल के मार्गदर्शन एवं एएसपी अमोलक सिंह ढिल्लो के नेतृत्व में जिले के स्वैच्छिक संगठनों द्वारा नवा बिहान नशामुक्ति जागरूकता अभियान एवं परामर्श केंद्र सरगुजा तथा ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र चोपड़ा पारा द्वारा ग्राम दरिमा में नशामुक्ति जागरूकता रैली निकाली गई।

इस दौरान एएसपी अमोलक सिंह ढिल्लो ने कहा कि नशे की लत से हमें स्वयं दूर रहना चाहिए। साथ ही अपने परिवार, गांव, समाज को नशे की लत से दूर रखने में हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी है। हम संकल्प लें कि हमारे परिवार में कोई नशा न करे। सेवाकेन्द्र संचालिका विद्या दीदी ने कहा कि आज हम राम जन्म उत्सव मना रहे हैं। राम मर्यादा पुरुषोत्तम थे। आज भी लोग इस रामराज्य की कल्पना करते हैं। हम भी राम के गुणों को धारण करेंगे, तभी रामराज्य ला सकते हैं। हम सबका परम कर्तव्य है कि हम सब मिलकर नशे के लत की व्यसन रुपी राक्षस को अपने जीवन, परिवार एवं समाज से दूर रखें। संचालन बीके ममता बहन ने किया। इसमें बड़ी संख्या में भाई-बहनों ने भाग लिया।

सार समाचार

कानपुर, उप्र। कोयला नगर सेंटर के वार्षिकोत्सव कार्यक्रम में यूपी विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना, विधानसभा सभा के प्रमुख सचिव प्रदीप दुबे, बीके नीलम बहन, बीके अर्चना बहन, बीके निकोलाई बहन, बीके दीक्षा बहन ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

खजुराहो, मप्र। विश्व स्वास्थ्य दिवस पर बीके विद्या दीदी के मार्गदर्शन में स्वस्थ जीवन बेहतर भविष्य को लेकर कार्यक्रम आयोजित किया गयाछ। इसमें बीके नीरजा बहन ने स्वस्थ रहने के लिए टिप्स बताए। स्वास्थ्य विभाग की ओर से दिनेश सोनी, रानी नगरिया, लक्ष्मी नगरिय, व्यापारी प्रमोद विश्वकर्मा, रमेश नगरिया सहित बड़ी संख्या में भाई-बहन मौजूद रहे।

चंदला/छतरपुर, मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा उप सेवाकेंद्र प्रभारी बीके भारती दीदी के मार्गदर्शन में रामनवमीं पर रामदरबार की सुंदर झांकी सजाई गई, जिसे पूरे नगर में भ्रमण कराया गया। इस मौके पर वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री दिलीप अहिरवार, नपा उपाध्यक्ष अंशू शुक्ला, श्रीराम सेवा समिति के नर्वदा प्रसाद गुप्ता, अजय सिंह, गुलाब पटेल, अतुल गुप्ता, अरविंद मिश्रा आदि मौजूद रहे।

जैतवारा, सतना, मप्र। स्वर्णिम प्रशासन अभियान के जैतवारा पहुंचने पर सेवाकेंद्र पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें एडवोकेट चंद्रदेव पांडेय, रिटायर्ड सूबेदार कैलाश प्रताप सिंह, भोपाल से डॉ. रीना दीदी, सेवाकेंद्र संचालिका बीके मीना दीदी, बीके मनोज भाई विशेष रूप से मौजूद रहे।

करेली, नरसिंहपुर, मप्र। नव युवक वानर सेना एवं सकल सनातन हिन्दू समाज समिति द्वारा नगर में विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया गया। इसमें ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा दिव्य राम दरबार सजाया गया। जिसका नगरवासियों द्वारा विभिन्न स्थानों पर पूजन-अर्चन किया गया।

इंदौर जोनल मुख्यालय में संत सम्मेलन आयोजित

तपस्वी मूर्त आत्मा ही संत कहलाती है: बीके आरती दीदी

शिव आमंत्रण, इंदौर, मप्र। ब्रह्माकुमारीज के क्षेत्रीय कार्यालय, ओम शांति भवन, न्यू पलासिया में अध्यात्म द्वारा सनातन संस्कृति की स्थापना विषय पर संत सम्मेलन का आयोजन किया गया। संतों की ओर से दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया, इसके बाद संतों का स्वागत जिला जज विनोद शर्मा ने किया।

दिव्य शक्ति आश्रम के महामंडलेश्वर कमल किशोर महाराज ने कहा है कि प्रेम के उदय से ही क्रोध होता है, दुख का कारण होता है क्रोध के कारण दुनिया पूरी तरह से अशांत हो जाती है। इंदौर जोन की निदेशिका बीके आरती दीदी ने कहा कि तपस्वी मूर्ति आत्मा ही संत कहलाती हैं और उनकी साधना से संसार खुशनुमा हो जाता है। इस सृष्टि पर ईश्वर का अवतरण हो चुका है और वह हमें आध्यात्मिक शिक्षा द्वारा श्रेष्ठ जीवन बना रहे हैं। पूर्व जस्टिस बीडी राठी ने कहा कि जिस घर में झगड़ा होता है वहां मिथ्या का जन्म होता है और मिथ्या के कारण हमारे बीच झगड़ा होता है। भारत की प्राचीन संस्कृति में सुखः शांति थी। वह देवी सभ्यता कहलाती थी।

एक तू ही जय गुरुदेव आश्रम के स्वामी मंदिरानंद महाराज ने कहा कि जब से सृष्टि का निर्माण हुआ तब से सनातन धर्म है। हम सब सनातनी हैं और एक पिता की संतान हैं। हम वृक्षों से पत्ते तोड़ते हैं तो हम वृक्षों से कोई प्रमाण नहीं लेते हैं। हम पत्थरों को भी पूजते हैं तो शिव का रूप धारण कर लेते हैं क्योंकि हमारे विश्वास के कारण उस पत्थर में भी ईश्वर हमें दर्शन देते हैं, परमात्मा दिखते नहीं हैं लेकिन उन्हें महसूस किया जा सकता है। सत्य को स्वीकार करना जरूरी है। दया और प्रेम भारत की संस्कृति का मूल मंत्र है। ॐ के उच्चारण से अध्यात्म का उदय होता है।

आदर्श रामशंकर महाराज ने कहा कि आत्मा अमर है, इसकी मृत्यु नहीं होती है बल्कि शरीर का विनाश होता है। महामंडलेश्वर ऑनलाइन लेबल महाराज ने कहा कि अध्यात्म और सनातन के बिना कुछ नहीं हो सकता। हम सभी डॉक्टर के बाद भगवान पर ही भरोसा करते हैं। धार्मिक विभाग के जोनल संयोजक बीके नारायण भाई ने कहा कि भारत की प्राचीनता को पुनः स्थापित करना ही संत सम्मेलन का उद्देश्य है। संचालन बीके आशा बहन और सागर भाई ने किया।

सार समाचार

भिलाई, छग। सेवाकेंद्र के पीस ऑडिटोरियम में समर कैंप का आयोजन किया गया। इसमें बच्चों को मेडिटेशन से लेकर मूल्य शिक्षा दी गई। साथ ही फिजिकल एक्टीविटीज से मनोरंजन कराया गया। कैंप में निदेशिका बीके आशा दीदी, बीके पूजा दीदी ने बच्चों को मोटिवेट किया।

घाटकोपर, मुंबई। ब्रह्माकुमारीज योग भवन द्वारा आरोग्यम हॉस्पिटल के सहयोग से निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर एवं स्वास्थ्य परिचर्चा का आयोजन विश्व स्वास्थ्य दिवस पर किया गया। डॉ. सोनल जोम्बराज ने पाचन तंत्र से संबंधित आहार, नियमित व्यायाम एवं आहार में परिवर्तन की महत्ता पर प्रकाश डाला। शिविर में 200 से अधिक लोगों की जांच की गई। बीके डॉ. कीर्तिमाला ने भी सेवाएं दीं।

इंदौर, मप्र। ओम शांति भवन न्यू पलासिया द्वारा 15वीं वाहिनी, विशेष सशस्त्र बल में जवानों के लिए तनाव मुक्त कार्यशाला आयोजित की गई। इस मौके पर बीके नारायण भाई, बीके प्रमिला बहन ने राजयोग के फायदे बताए। इस दौरान उप सेनानी विशाल सिंह, सहायक सेनानी विनोद सिंह, निरीक्षक केतन सांवले, निरीक्षक सत्येंद्र सिंह सहित जवान मौजूद रहे।

गढ़वाल विश्वविद्यालय में महासम्मेलन आयोजित

शिव आमंत्रण, श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखंड। गढ़वाल केंद्रीय विश्वविद्यालय के बिड़ला परिसर में ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र एवं शिपिंग एविएशन एंड टूरिज्म विंग द्वारा देवभूमि पर्यटन महासम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें पर्यटन व्यवसाय से जुड़े लोगों के साथ स्थानीय व विश्वविद्यालय के पर्यटन विभाग और मैनेजमेंट के छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

उत्तराखंड सरकार के राज्यमंत्री श्यामवीर सैनी ने कहा कि भारत की संस्कृति में अतिथि को भगवान का दर्जा दिया गया है और भगवान वहीं आना पसंद करते हैं, जहां स्वच्छता होती है। ब्रह्माकुमारी बहनों के मन भी स्वच्छ और उनके तन भी स्वच्छ और कर्म भी स्वच्छ हैं।

विंग की नेशनल कोऑर्डिनेटर राजयोगिनी बीके कमलेश दीदी ने कहा कि चेहरे का भाव तन पर पहने कपड़ों से भी अधिक महत्व रखता है। जिसके चेहरे पर मुस्कुराहट होती है उसके चारों तरफ पॉजीटिव वाइब्रेशंस फैलती रहती है। सफल होटल कारोबारी हमेशा नम्रता से अपना कार्य करवाता है। स्पोर्ट्स विंग के नेशनल कोऑर्डिनेटर बीके मेहर चंद ने कहा कि खुशी सहज और निरंतर तब रहती है जब हम दिल से सेवा करते हैं। गढ़वाल केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रोफेसर राकेश कुमार ढोडी ने कहा कि पर्यटक को जितना जरूरी यात्रा करना है उतना ही जरूरी पढ़ना भी है। संसार के जो सर्वोत्तम पर्यटक हुए हैं, उन्होंने कम से कम डेढ़ लाख किमी की यात्रा और दस हजार से अधिक पुस्तकों का अध्ययन किया है। होटल एसोसिएशन के अध्यक्ष संदीप साहनी, चारधाम होटल एसो. के सचिव प्रतीक कर्नवाल, जोनल कोऑर्डिनेटर बीके शैली बहन, सेवाकेंद्र प्रभारी बीके नीलम बहन ने भी संबोधित किया।

मुंबई। ऐरोली क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री सुषमा शिंदे को बीके मीना दीदी और बीके उषा दीदी ने सम्मानित किया। साथ ही सांसद नरेश मस्के को ईश्वरीय सौगात भेंट कर सम्मानित किया। इस कार्यक्रम में शिवसेना उपप्रमुख विजय चौगुले भी विशेष रूप से उपस्थित थे।

शक्तिशाली मन हर समस्या का हल है : बीके श्रेया दीदी

शिव आमंत्रण, देगलूर, महाराष्ट्र। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र द्वारा चिद्रावार मिल के विशाल ग्राउंड में श्रीमतभगवत गीता ज्ञान से खुशनुमा जीवन विषय पर व्याख्यानमाला आयोजित की गई। इसमें मुंबई से पधारीं प्रेरक वक्ता बीके श्रेया दीदी ने मन की शान्ति विषय पर कहा कि मन को स्थिर और शक्तिशाली बनाने के लिए सोच पर काम करें। सदा ही श्रेष्ठ संकल्पों का चयन करें। श्रेष्ठ संकल्प ही मन को शक्तिशाली बनाते हैं और शक्तिशाली मन हर समस्या का हल है। मन की शक्तियों को जागृत करने के लिए स्वयं को आत्मा समझना जरुरी है। परिस्थिति कैसे भी हो हमें स्व स्थिति पर ध्यान देना है। स्वयं को बदलना है। परिस्थिति का ज्यादा चिंतन नहीं करना चाहिए।

तहसीलदार भारत सूर्यवंशी ने कहा कि गीता का ज्ञान व्यवहारिक जीवन में शांति प्रदान करता है। पूर्व मुख्य अधिकारी बालाजीराव पाटिल खतगावकर ने आभार व्यक्त किया। बीदर की संचालिका राजयोगिनी बीके सुमंगला दीदी, ग्लोबल पीस विलेज की निदेशिका राजयोगिनी बीके सुनंदा दीदी, बीके लक्ष्मी दीदी, बीके विद्या दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

मालिया हटिना, गुजरात। सेवाकेंद्र पर बिजनेस एंड इंडस्ट्रीज़ विंग द्वारा संतुलित व्यापार खुश रहे परिवार विषय पर सेमीनार आयोजित किया गया। इस मौके पर विशेष रूप से पीआई सलमा सुमरा, चेंबर ऑफ कॉमर्स के प्रमुख महेंद्रभाई गांधी, सरपंच जीतूभाई सोदिया, जिला भाजपा प्रमुख सोनल गोस्वामी, डॉ. जतिनभाई देसाई, बीके रूपा बहन और बीके मीता बहन मौजूद रहीं।

सत्यता और पवित्रता हमारे अंदर प्रत्यक्ष है तो विश्व सेवा होगी

प्रेरणापुंज

राजयोगिनी दादी जानकी,
पूर्व मुख्य प्रशासिका,
ब्रह्माकुमारीज़,
माउंट आबू

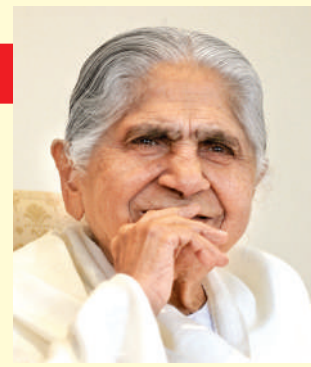

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

हम सब हद से फ्री हो अपने स्वभाव-संस्कार, चाहे दूसरे के स्वभाव-संस्कार के वश भी हैं तो विश्व सेवा हमारे से नहीं हो सकती है, क्योंकि सिर्फ देवता धर्म वालों की सेवा नहीं करनी है, सारी विश्व परमात्मा की संतान है। विश्व को शांति चाहिए तो हम आत्मा- धर्म, जाति, रंग, भाषा भेद सबसे न्यारी होगी तो विश्व सेवा हो सकती है। जितना हम निराधार रहेंगे, उतना विश्व सेवा हो सकती है। जितना हमारी निरहंकारी स्थिति होगी तब विश्व सेवा हो सकती है। बाहर वाले लोगों ने जरा सा अहंकार हमारे में देखा या गुस्सा देखा तो कभी भी वह बाबा के नजदीक नहीं आएगा। बाहर वालों को भी अभिमान या गुस्सा अच्छा नहीं लगता है। अंदर की सत्यता और पवित्रता प्रत्यक्ष हमारे अंदर है तो विश्व सेवा होगी।

■ अंतकाल जो नारायण सिमरे- इतना ऊंच पद पाने का सदा ख्याल रहे, इसी धुन में रहें

सत्यता और पवित्रता को प्रत्यक्ष करने वाली है 'नम्रता'। अगर नम्रता है तो निरहंकारीपना है। बाबा ने हम सबका ध्यान खिंचवाया और कहा कि बच्चे ग्लोब (विश्व) आपके हाथों में है। सारे विश्व हमारे हाथों में आने वाली है, परन्तु उनको जब शान्ति मिलेगी, तब तुम्हारे हाथों में आएगी। तुम अभी ग्लोब के ऊपर बैठो तो हम जितना ग्लोब के ऊपर रहेंगे तो बाबा के पास रहेंगे। साथ रहेंगे तो विश्व सेवा हो सकती है। लेकिन अगर इधर-उधर अनेक बातों में घूमते रहेंगे तो विश्व सेवा कैसे हो सकती है? उसके लिए बहुत फुर्सत चाहिए। बुद्धि को फालतू बातों में बिजी नहीं करो। तो एक सच्चा सेवाधारी, दूसरा बेहद का सेवाधारी, तीसरा विश्व सेवाधारी बनो। जो मैं और मेरे-पन से मुक्त हैं। वही निमित्त हैं।

ज्ञान रत्नों का मंथन करें और अमल में लाएं...

बाबा के मधुर बोलों को दिल में समाकर सम्पूर्णता और संपन्नता को समीप लाना है, तब ही बाप समान जो हमारे अंदर योग्यताएं हैं वह आना संभव है। मीठे ज्ञान सागर बाबा ने हमें इतने ज्ञान रत्न दिए हैं, जो अंदर में सब भरे हुए हैं। सिर्फ उसका थोड़ा मंथन करें, अमल में लाएं। सिर्फ हम मुख से नहीं कहें कि यही ज्ञान सही है, यही योग सच्चा है। वह इस मुख से कहें कि यही सत्य ज्ञान है। बाबा ऐसे सुंदर बोल उच्चारण करते हैं जो दिल को लग जाते हैं। हम तो बीज से निकले हैं, हम तना हैं हमारे से यह जो शाखाएं निकलेंगी उनको शक्ति यहां से भरनी है। जब भी आएं द्वापर में आएं या कलियुग में आएं वह भी लाखों-करोड़ों के आधारमूर्त हैं। धर्म की स्थापक आत्माएं जो हैं उनके आधार पर लाखों-करोड़ों आत्माएं हैं। वह आत्माएं भी शक्ति यहां से लेंगी। धर्म पिताओं को भी धर्म स्थापन करने की शक्ति यहां से मिलेगी। बाकी जो ब्राह्मण बने हैं वह देवता बनेंगे। हम देवताओं में भी ऊंच पद पाने वाले हैं। हमें सदा स्मृति किसकी है? बाप को याद करना है लेकिन सिमरण पद का है जरूर। अंतकाल जो नारायण सिमरे- इतना ऊंच पद पाने का सदा ख्याल रहे। भले और ज्ञान-योग कितना भी हो परन्तु अंतकाल में ख्याल उसी का आता है, जिसके साथ प्यार होता है तो हम बेहद के बाबा के बच्चे हैं। बेहद का वर्सा मिल रहा है, बेहद की खुशी है, नशा है। बाबा कहते तुम तना हो, तना से ही वृक्ष को शक्ति मिलती है। तो इस नए वर्ष में यहां से वहां भावना भर करके जाओ कि सफल करते, सफलता पानी है। सफलतामूर्त बनना है और सब पुरानी बातों से मुक्त हो जाएं। अभी हमको मुक्ति वर्ष मनाना है जो निमित्त बनी हुई आत्माएं हैं वह बाबा के स्नेह के बंधन में बंधी हुई हैं। क्रमशः

रियल लाइफ **प्रजापिता ब्रह्मा बाबा,** संस्थापक, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, माउंट आबू

जब भारत लौटने पर अनेक अखबारों ने विदेश सेवा का समाचार प्रकाशित किया

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

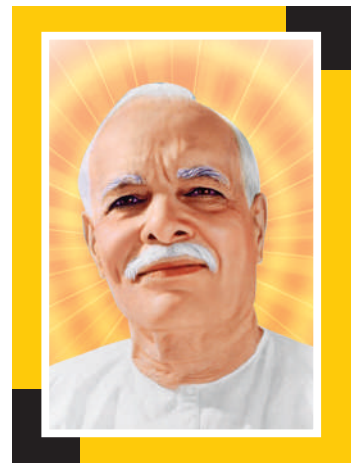

भारत में वापस लौटने पर मद्रास से प्रकाशित होने वाले दैनिक पत्र 'इण्डियन एक्सप्रेस' तथा 'हिन्दू' ने भी समाचार प्रकाशित किया और देहली तथा मुम्बई के समाचार पत्रों ने भी हमारे समाचार को स्थान दिया। उदाहरण के तौर पर देहली इण्डियन एक्सप्रेस के रविवारीय संस्करण 'सण्डे स्टेण्डर्ड' ने दिनांक 8 नवम्बर, 1955 को 'ब्रह्माकुमारी बहनों की पूर्वी देशों की यात्रा से वापसी', इस शीर्षक के अन्तर्गत समाचार और फोटो छापे तथा 'सण्डे स्टेण्डर्ड' ने दिनांक 8 नवम्बर, 1955 को जापान में विश्व धर्म सम्मेलन में दिये गये हमारे भाषण का सारांश हमारे फोटो सहित छापा।

चित्रकूट में अखिल भारतवर्षीय भक्ति योग दार्शनिक सम्मेलनः अक्तूबर, 1955 में चित्रकूट में 'अखिल भारतवर्षीय भक्तियोग दार्शनिक सम्मेलन' हुआ। उसमें सम्मिलित होने के लिए ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय को भी निमन्त्रण प्राप्त हुआ। ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि जी, गंगा जी, रत्नमोहिनी जी तथा ब्रह्माकुमार आनन्दकिशोर जी भी उसमें सम्मिलित हुए। ब्रह्माकुमारी आत्म-मोहिनी जी (गंगा जी) ने लिखा है 'उस सम्मेलन में अनेकानेक विद्वान्, पण्डित, आचार्य, संन्यासी, तथाकथित 'जगद्गुरु' आदि आये हुए थे। उत्तर प्रदेश के अनेकानेक नगरों से तथा आसपास के गाँवों से श्रोता लोग भी काफी संख्या में इकट्ठे हुए थे। साधुओं-सन्तों के टेण्टों (खेमों) से एक नया नगर-सा बसा हुआ लगता था। निरन्तर कई दिन का प्रोग्राम था। मंच पर कई बार विद्वानों में मत-विरोध हुआ। जनता ने उनमें स्पष्ट रूप से वाक्-युद्ध देखा। एक विद्वान् जो भाषण कर जाता, दूसरा विद्वान् अपने भाषण में उसका खण्डन कर देता। शास्त्रों के हवाले दे-देकर सभी अपने-अपने मत का मण्डन करते थे। श्रोतागण के मन में उलझन पैदा हो गई कि आख़िर सत्य-मार्ग कौन-सा है। उन्हें लगा कि शास्त्रों में भी मत-विरोध है। यदि शास्त्र एक-दूसरे का खण्डन न भी करते हों तो उनके विद्वान् तो करते ही हैं। लोग तो वहाँ यह आशा लेकर आये थे कि चित्रकूट के वातावरण में जब शीतल स्वभाव से विद्वान् लोग प्रभु-चर्चा करेंगे तो मन को शान्ति प्राप्त होगी। परन्तु वहाँ उन्होंने देखा कि कुछेक विद्वानों के मन में तो एक-दूसरे के प्रति आग भड़क रही है। कुछेक विद्वानों को बोलने का समय कम दिया गया था। वे रुष्ट हो गए थे।

लोगों में यह चर्चा थी कि इस सम्मेलन के आयोजक 'सन्त कृपालु जी' ने अपनी प्रसिद्धि के लिए तथा अपनी विद्वता का लोहा मनवाने के लिए इस सम्मेलन का आयोजन किया है। आयोजन का आशय कुछ भी रहा हो परन्तु इतना तो अवश्य है कि श्रोतागण को किसी एक सर्वोत्तम जीवन-दर्शन का सरल और सुनिश्चित शब्दों में बोध नहीं हुआ। विद्वान् लोगों की क्लिष्ट भाषा, शास्त्रों के ब्योरे और पण्डिताई प्रदर्शन में वे बेचारे तो वास्तविक ज्ञान-प्राप्ति से वंचित-से ही रहे। एक बार तो लड़ाई का-सा वातावरण भी पैदा हो गया था क्योंकि दो प्रवक्ताओं के मन में जो मनमुटाव और विरोध हुआ, उसके परिणामस्वरूप उनके अनुयायियों में भी ठन गई। लड़ाई की आग शीघ्र ही बुझा दी गई। हम लोगों को तो कोई पेचीदा बात कहनी ही न थी। हमें सरल शब्दों में ईश्वरीय सन्देश ही देना था, सो दिया। अपना कर्त्तव्य पूरा किया। जगह-जगह से जो साधु-संन्यासी आये हुए थे, उन्हें भी हम व्यक्तिगत रूप से मिलीं तथा उस अवसर पर चित्रकूट में 'ईश्वरीय ज्ञानोपदेश' पुस्तिका छपाकर सभी को दी गई। इस सम्मेलन के अवसर पर संत कृपालु जी को दिनांक 25 अक्तूबर, 1955 को एक तार भी आबू से भेजा गया था। उसमें लिखा था -

इस धर्म सम्मेलन में सम्मिलित होने वाले सभी भारतवासी विद्वानों, आचार्यों, पंडितों, संन्यासियों आदि-आदि को यह सन्देश दीजिये कि किसी को भी निराकार, ज्ञान-सागर, सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा शिव का सत्य ज्ञान नहीं है जोकि त्रिमूर्ति परमात्मा शिव कल्प (5000 वर्ष) में केवल एक ही बार अवतरित होकर देते हैं। यदि आप ब्रह्माकुमारियों को, जोकि आपके सम्मेलन में प्रतिनिधि रूप में सम्मिलित हुए हैं, से मिलेंगे और ध्यान देकर सुनेंगे तो वे आपको निराकार परमपिता परमात्मा का सत्य परिचय देंगी और बतायेंगी कि कैसे वे आदि-देव प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होते हैं और शिरोमणि श्रीमद्भगवद्गीता का ज्ञान देते हैं और बाद में कैसे चतुर्भुज विष्णु के साकार युगल रूप श्रीलक्ष्मी और श्रीनारायण द्वारा सतयुगी देव-सृष्टि का पालन कराते हैं। वे शंकर के द्वारा कलियुगी अनेक अधर्मों का महाविनाश भी कराते हैं। (क्रमशः)

अव्यक्त इशारे **राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी (गुलजार दादी)**, पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू

अपने को रियलाइज करें, क्या बाबा समान बनी हूं

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

बाबा कहते हैं कि समय को तो देख रहे हो, कितना बदल रहा है। हमको क्या करना है, वह सोचो। ऐसे नहीं कि समय आएगा तो हम तैयार हो जाएंगे। फिर तो समय हमारा शिक्षक हुआ, परमात्मा नहीं। परमात्मा ने इतना समझाया तो हम नहीं बदले और समय जब आया तो बदल गए तो मेरा कौन शिक्षक हुआ? परमात्मा हुआ या समय हुआ। कितने नशे की बात है कि बड़े से बड़ा शिक्षक खास परमधाम से हमको पढ़ाने के लिए आता है, इतने तो हम सिकीलधे हैं, लाड़ले हैं, ऊंचे हैं जो खास परमात्मा हमारे लिए आता है पढ़ाने के लिए। यह साधारण बात तो नहीं है ना! तो बाबा ने कहा कि सर्वस्व त्यागी और बेहद के वैरागी बनो।

बाबा कहते अपने को रियलाइज करो, सेल्फ रियलाइज करो- यह मोह, यह लोभ क्यों होता है? वैराग्य की कमी। बेहद का वैराग्य, ऐसे नहीं एक चीज मुझे अच्छी नहीं लगती है या कोई ने धोखा दिया उससे वैराग्य आ गया। वह कोई वैराग्य थोड़े ही हुआ, वह तो बैर हुआ। उसको वैराग्य कैसे कहेंगे। वैराग्य माना ज्ञान से, समझ से, दिल से, वैराग्य एक से लगाव हो एक से नहीं हो, तो वह बेहद का तो नहीं हुआ न, हद हुई। सेवा तो करते हैं और सेवा तो होनी ही है। पहले हम सेवा के पीछे दौड़ते थे, अभी सेवा हमारे पीछे-पीछे दौड़ रही है। कितने निमंत्रण मिलते हैं। सेवा तो बहुत की है, लेकिन बाबा कहते अपने को रियलाइज करो। सेल्फ रियलाइज करो- मैं आत्मा हूं यह तो समझ लिया, लेकिन आत्मा जो सम्पूर्ण बननी चाहिए वह सम्पूर्ण आत्मा हूं? ऐसे आत्मा तो पापात्मा भी है, रजोगुणी आत्मा भी है लेकिन हम कौन सी आत्मा हैं? तो सेल्फ में यह रियलाइजेशन किया कि मैं आत्मा हूं लेकिन जो हमारा लक्ष्य है कि मैं बाप समान बनूं, संपूर्ण बनूं। हमारा जो टाइटल है- सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी... वह यहां ही तो बनना है ना। डिग्री तो अभी लेनी है, फिर स्टेटस वहां मिलेगा। अपने को रियलाइज करना है कि मैं सचमुच बाप समान बनी हूं?

हमारा हर कर्म श्रीमत के प्रमाण हो...

जो भी काम करो चेक करो कि ब्रह्मा बाबा को यह प्यारा है। अगर ब्रह्मा बाबा को प्यारा नहीं है तो मैं नहीं कर सकती हूं। हमारा बहुत सहज पुरुषार्थ है, मेहनत करने की जरूरत ही नहीं है, क्योंकि हमको फॉलो करना है। कोई अपना रास्ता तो बनाना ही नहीं है। जो सोचें कि पता नहीं यह ठीक होगा या नहीं होगा। मंजिल मिलेगी कि नहीं मिलेगी, यह सोचने की जरूरत ही नहीं है। हमें तो जो ब्रह्मा बाबा ने किया है उसके कदम के पीछे कदम रखना है। शिव बाबा ने सवेरे से रात्रि तक के लिए श्रीमत दी हुई है। कैसे उठो, कैसे काम करो, कैसे भोजन बनाओ, कैसे खाओ, कर्म करते हो, व्यापार करते हो या दफ्तर में जाते हो तो कर्मयोगी कैसे बनो? हर कर्म के लिए बाबा की श्रीमत है। तो जो श्रीमत है उसी प्रमाण चलते चलो तो मुश्किल क्या है? सोचो ही क्यों? अमृतवेले आप अपने जीवन की गाड़ी श्रीमत की पटरी पर चढ़ा दो तो सहज चलती रहेगी। सोचने की या मेहनत करने की जरूरत ही नहीं है, सिर्फ कॉपी करनी है। परन्तु कहते हैं कि नकल करने का भी अक्ल चाहिए। हम सभी तो नालेजफुल हैं, इसलिए जो काम शुरू करो - उसमें पहले सोचो कि बाबा की श्रीमत हर कर्म के लिए क्या है? क्रमशः

जयपुर के झोट वेव में बना है सेवाकेंद्र: सांसद, बीके करुणा भाई, बीके सुदेश दीदी, बीके सुषमा दीदी ने किया उद्घाटन

प्रभु मन भावन सेवाकेंद्र समाजसेवा के लिए समर्पित

जयपुर, राजस्थान। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा झोट वेव स्थित नवनिर्मित प्रभु मन भावन भवन सेवाकेंद्र का भव्य उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जयपुर ग्रामीण सांसद राव राजे राजेंद्र सिंह ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्था ईश्वर के शुभ विचार का चरितार्थ करने का दिव्य कार्य कर रही है। संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके सुदेश दीदी ने कहा कि प्रभु मनभावन भवन से ईश्वरीय संदेश जन-जन तक पहुंचाने का माध्यम बनेगा। आत्मा रूपी सीता माया रूपी रावण की जेल में फंस गई है, जिससे मुक्ति का मार्ग केवल एक परमात्मा ही हमें बता सकता है।

अतिरिक्त महासचिव एवं मल्टीमीडिया प्रमुख बीके करुणा भाई ने कहा कि परमात्मा ज्योतिबिंदु स्वरूप हैं और हम सभी आत्माओं के पिता हैं। राजयोग से हम जुड़कर अपने जीवन को देवतुल्य बना सकते हैं।

राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डॉ. अल्पना कटाजा ने कहा कि ॐ शांति का स्मारक आपके अपने में है। जब हम वसुधैव कुटुंबकम की भावना को आत्मासात करेंगे, तब ही हमारे सभी साथियों का समाधान होगा।

रानी रत्नाकुमारी फाउंडेशन की संस्थापक रत्नाकुमारी ने कहा कि राजयोग के माध्यम से ही भगवान का सान्निध्य मिल सकता है, जिसे जन-जन तक पहुंचाने का दिव्य कर्त्तव्य ब्रह्माकुमारी बहनें कर रही हैं। ब्रह्माकुमारी का पवित्र जीवन एवं समर्पण सभी के लिए प्रेरणादायक है।

धार्मिक प्रभाग की अध्यक्षा बीके मनोरमा, जयपुर सबज़ोन प्रभारी बीके सुषमा दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। समारोह में दो हजार से अधिक लोग मौजूद रहे।

मुंबई में गुड़ी पड़वा पर निकाली पर्यावरण जागरूकता रैली

कलवा, मुंबई। गुड़ी पड़वा के पावन अवसर पर ब्रह्माकुमारीज ने जागरूकता रैली निकाली। साथ ही 'एक्सहिबिशन ऑन व्हील्स' का आयोजन किया गया। जिसका विषय था- नए युग का निर्माण, हमारी जिम्मेदारी, हमारा भविष्य। इस पहल का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता और टिकाऊ जीवन को बढ़ावा देना और समाज को पर्यावरण अनुकूल प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रेरित करना था। ग्रीन अर्थ, क्लीन अर्थ पौधारोपण और स्वच्छता को प्रोत्साहित करना था। हाथों में तख्तियां लिए भाई-बहनों ने भाग लिया।

हैप्पीनेस विषय पर कार्यक्रम आयोजित

पांडव भवन, करोल बाग, दिल्ली। सेवाकेंद्र द्वारा भण्डारण सीडब्ल्यूसी के रीजनल ऑफिस में हैप्पीनेस दीक्षा का आयोजन किया गया। इसमें बीके रेनु बहन, बीके अनुषा बहन, बीके कपिल भाई ने अपने विचार व्यक्त किए। इस दौरान कंपनी के एचओडी फाइनेंस कविता कथूरिया, एडमिन और एचआर आरती सहित स्टाफ मौजूद रहा।

ओआरसी में आईटी विंग की मनभावन रिट्रीट आयोजित

गुरुग्राम। ओआरसी में आईटी विंग द्वारा बीके सदस्यों और आईटी पेशेवरों के लिए मनमनाभव रिट्रीट का आयोजन किया।

इसमें ओआरसी की निदेशिका बीके आशा दीदी, रुस की निदेशिका बीके संतोष दीदी, दुबई से ज्योति दीदी, शक्ति नगर दिल्ली की बीके चक्रधारी दीदी, सिरी फोर्ट की रमा दीदी, महिपालपुर की अनसूया दीदी और प्रेरक वक्ता बीके शिवानी दीदी ने संबोधित करते हुए जीवन के सूत्र बताए। गुरुग्राम के पुलिस आयुक्त विकास कुमार अरोड़ा ने ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े अपने अनुभव साझा किए। कई ध्यान सत्र हुए जिनमें सदस्यों को स्वमान की गहराई, आत्मिक दृष्टि, बाबा के साथ विभिन्न संबंध, लवलीन स्थिति, देही अभिमानी स्थिति, बीजरूप स्थिति, ज्वाला स्थिति का अनुभव हुआ। अन्य गतिविधियों में पूर्वज से दृष्टि लेना, अव्यक्त मुरली अध्ययन और मुरली पर आधारित कार्यशालाएँ शामिल थीं। प्रतिभागियों ने प्रतिदिन शाम को 3.5 घंटे लगातार ध्यान किया।

अंतरराष्ट्रीय समाचार

बोस्टन, यूएसए। हार्वर्ड विश्वविद्यालय में ग्लोबल रिसर्च कॉन्फ्रेंस, स्किल्स लाइव प्रोग्राम जनरेटिव आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर बीके डॉ. गीता दीदी ने राजयोग ध्यान के सशक्त प्रभाव के बारे में भाषण दिया। एलओएसडी के निदेशक सीईओ प्रो. डॉ. परिन सोमानी ने गीता दीदी का सम्मान किय।

लॉस एंजिल्स (यूएसए)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा चार अलग-अलग स्थानों पर शिवरात्रि समारोह का आयोजन किया गया। बीके विनो दीदी के नेतृत्व में आयोजित कार्यक्रमों में सभी को शिवरात्रि का महत्व बताते हुए राजयोग मेडिटेशन से गहन शांति की अनुभूति कराई।

रशिया। ब्रह्माकुमारीज सेंटर पर रूसी संघ में श्रीलंका की राजदूत शोबिनी गुणसेकरा के आगमन पर बीके सुधा दीदी ने राजयोग मेडिटेशन के बारे में बताया। उन्होंने गहराई से अध्यात्म और राजयोग पर चर्चा की।

घाटकोपर, मुंबई। घाटकोपर सबजोन ब्रह्माजी योग भवन द्वारा गुड़ी पड़वा, चैती चांद, चैत्र नवरात्रि शुभ अवसर को बड़े पैमाने पर प्रोत्साहित किया, पर्व उल्लास और उग्रवाद के साथ मनाया गया। इसमें वरिष्ठ राजयोग शिक्षक बी.के. विष्णुप्रिया, बीके निकुंज, बीके शकु ने विचार रखे।

राजनांदगांव, छग। सेवाकेंद्र पर नगर के नवनिर्वाचित महापौर, अध्यक्ष एवं पार्षदों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस मौके पर सेवाकेंद्र संचालिका बीके पुष्पा दीदी, महापौर मधुसुदन यादव, निगम अध्यक्ष पारस वर्मा, बीके सुषमा बहन, प्रभा बहन, रम्भा बहन, पूजा बहन, मुरलीधर सोमानी भाई, हफीज खान सहित सभी नवनिर्वाचित पार्षदगण मौजूद रहे।

स्वयं को स्वयं से जोड़ने के लिए साइलेंस वॉक जरूरी

छतरपुर, मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा विश्व स्वास्थ्य दिवस को लोगों में अपने साथ समय बिताने के लिए, सोशल मीडिया से दूर रहकर साइलेंस वॉक जिसमें हम स्वयं के साथ जुड़ सके इसकी जागृति के लिए किशोर सागर से हनुमान टोरिया तक वॉकथॉन अर्थात पैदल यात्रा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बीके रीना ने कहा कि सिर्फ शारीरिक रूप से स्वस्थ होना ही संपूर्ण स्वास्थ्य नहीं है बल्कि इसके साथ-साथ हमारा मन भी खुश एवं स्वस्थ होना चाहिए, हमारे लोगों के साथ संबंध ठीक होने चाहिए एवं साथ-साथ आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए स्वयं को एक ऊर्जा समझकर कार्य करना चाहिए। तभी हम संपूर्ण स्वास्थ्य को प्राप्त कर सकते हैं।

बीके कल्पना ने पैदल चलने के फायदे बताते हुए कहा इससे ब्लड सरकुलेशन अच्छा रहेगा जो हमारे ब्लड प्रेशर और कोलेस्ट्रॉल को कंट्रोल करेगा, हमारे अंदर ताजगी लाएगा। इस मौके पर ट्रेजेरी ऑफिसर राजेश रूपालिया, डॉ रामपाल तिवारी, व्यापारी लक्ष्मण मोदी एवं शशांक कश्यप ने पैदल चलने के फायदे बताते हुए सभी को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया।

छतरपुर पहुंचने पर नशा मुक्त भारत अभियान रथ का किया स्वागत, जिलेभर में दिया संदेश

छतरपुर, मप्र। भोपाल से पहुंचे नशा मुक्त भारत अभियान रथ का स्वागत किया और छतरपुर जिले में इस अभियान का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर सेवाकेंद्र प्रभारी बीके शैलजा दीदी ने अभियान को लेकर चल रहे बीके आशीष और बीके राम भाई का तिलक लगाकर स्वागत किया और सभी को नशा मुक्त की शपथ दिलाई। इसके साथ ही अभियान की सफलता के लिए शुभकामनाएं दीं। इस दौरान प्रोजेक्ट डायरेक्टर राजेश रूपौलिया, बीके रीना दीदी, बीके रजनी दीदी सहित अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।

सार समाचार

भरतपुर, राजस्थान। जिला प्रशासन एवं महिला अधिकारिता विभाग द्वारा अंर्तराष्ट्रीय महिला दिवस सप्ताह के अंतर्गत जिला स्तरीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें भाजपा जिलाअध्यक्ष शिवानी दायमा, कलेक्टर अमित यादव, महिला अधिकारिता विभाग के उपनिदेशक राजेश ने ब्रह्माकुमारीज़ की सह प्रभारी बीके बबीता बहिन का प्रमाण पत्र भेंटकर सम्मान किया। इस दौरान बीके प्रवीणा दीदी भी विशेष रूप से मौजूद रहे। कार्यक्रम में बीके बबीता दीदी ने कहा कि महिलाएं अंदर से सशक्त बनें। नारी शक्ति परमात्मा शिव की शक्ति है। वह अपने स्वरुप को पहचाने। नारी के सामर्थ्य और उनकी परिश्रम की पराकाष्ठा का कोई अंदाजा नहीं लगाया जा सकता है।

ऐरोली, नवी मुंबई। महावीर जयंती पर श्री 1008 अजितनाथ दिगंबर जैन मंदिर ऐरोली (सेक्टर 19) में शांति रैली का आयोजन किया गया। इस दौरान बीके मीरा बहन ने भगवान महावीर की शिक्षाओं को वर्तमान जीवन से जोड़ते हुए कहा कि भगवान महावीर स्वामी ने सम्पूर्ण मानवता को अहिंसा, संयम और आत्म कल्याण का दिव्य मार्ग दिखाया है।

'तनावमुक्त जीवन' कार्यशाला

इंदौर, मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ के जोनल मुख्यालय न्यू पलासिया स्थित ओम शांति भवन द्वारा निजी हॉस्पिटल में तनाव मुक्त जीवन कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस मौके पर बीके नारायण भाई और प्रमिला बहन ने राजयोग के बारे में बताया। इस दौरान डॉ. ऋषि, सीनियर नर्स श्वेता, बीके राधेश्याम सहित स्टाफ मौजूद रहा।

जगदंबा भवन की वर्षगांठ मनाई

पुणे, महाराष्ट्र। मातेश्वरी जगदंबा की स्मृति में विश्व के एकमात्र पुणे के पिसोली में स्थित जगदंबा भवन रिट्रीट सेंटर की सातवीं वर्षगांठ मनाई। बीके टीचर्स के लिए विशेष दो दिवसीय दिव्य भट्टी आयोजित की गई। इस मौके पर बीके चक्रधारी दीदी, रिट्रीट सेंटर की निदेशिका बीके सुनंद दादी सहित अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।

नवापारा/राजिम, छग। राजिम कुंभ मेले में पधारे छग के विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह से ब्रह्माकुमारीज़ के नवापारा सेवाकेंद्र की संचालिका बीके पुष्पा दीदी और इंदौर के धार्मिक प्रभाग के जोनल संयोजक बीके नारायण भाई ने मुलाकात कर परमात्मा का स्मृति चिंह भेंट किया।

राजयोग अनुभूति शिविर आयोजित

रायपुर,छग। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा ग्राम पंचायत भवन गुमा में समस्या रहित जीवन जीने की कला-राजयोग अनुभूति शिविर आयोजित किया गया। शुभारंभ उप सरपंच नितेश साहू, पंच चन्दूलाल साहू, राजयोग शिक्षिका ब्रह्माकुमारी भावना दीदी, गायत्री दीदी और प्रतिभा दीदी ने किया। शिविर में आत्मानुभूति, परमात्मानुभूति, कर्मों की गहन गति, भारत के उत्थान और पतन की कहानी, राजयोग अनुभूति और समय की पहचान आदि विषयों पर राजयोग शिक्षिका ब्रह्माकुमारी गायत्री दीदी ने व्याख्यान दिया।

इस दौरान गीता में वर्णित भारत के प्राचीन राजयोग का गहन अभ्यास कराया गया। जो कि शरीर के अनेक घातक रोगों जैसे हृदयरोग, डायबिटीज, ब्लड प्रेशर, डिप्रेशन आदि के निवारण में बहुत ही लाभदायक सिद्ध हुआ है। सभी योगों में श्रेष्ठ होने के कारण इसे राजयोग कहा जाता है तथा सहज होने के कारण समाज के हर वर्ग में यह योग तेजी से लोकप्रिय होता जा रहा है।

अंबिकापुर, छग। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सरस्वती शिक्षा महाविद्यालय में बीएड की छात्र-छात्राओं के लिए 15 दिवसीय आध्यात्मिक शिक्षा सत्र आयोजित किया गया। बीके पार्वती दीदी ने राजयोग का अभ्यास करने से प्राप्त होने वाली अष्ट शक्तियों सहन करने की शक्ति,समाने की शक्ति, पैर रखने की शक्ति, निर्णय की शक्ति, सामना करने की शक्ति, सहयोग करने की शक्ति, विस्तार को संकीर्ण करने की शक्ति, समेटने की शक्ति के बारे में गहराई से प्रकाश डाला।

शिव आमंत्रण, सदस्यता हेतु संपर्क करें-

वार्षिक मूल्य ▶ 150 रुपए ▶ तीन वर्ष 450 रुपए
▶ आजीवन 3500 रुपए
मो ▶ 9414172596, 8521095678
Website ▶ www.shivamantran.com

पत्र व्यवहार का पता

संपादक ▶ ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़, शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो ▶ 8538970910, 9179018078
Email ▶ shivamantran@bkivv.org

For online transfer

A/C Name: Rajyoga Education & Research Foundation
A/C Number: 35401958118, IFSC Code: SBIN0010638
Bank & Branch: State Bank Of India, PBKIVV, Shantivan, Abu Road, Rajasthan
Note: On transfer please email details to: shivamantran.acct@bkivv.org, Helpline: 9471854331

Scan To Pay

शिव आमंत्रण, लोधी रोड,दिल्ली। राष्ट्रीय लघु उद्योग लिमिटेड (एनएसआईसी) में वर्क लाइफ बैलेंस विषय पर गोष्ठी के उपरांत डॉ एस एस आचार्य, सीएमडी, बीके पीयूष, बीके गिरिजा एवं प्रतिभागी समूह चित्र में ।

परंपरा और संस्कृति को अगली पीढ़ी तक पहुंचाना हमारी जिम्मेदारी

शिव आमंत्रण, ग्वालियर, मप्र।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के प्रभु उपहार भवन माधौगंज सेवाकेंद्र पर नव वर्ष, गुडी पड़वा एवं चैत्र नवरात्रि के पावन उपलक्ष्य में स्नेह मिलन कार्यक्रम आयोजित किया गया। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके आदर्श दीदी ने कहा कि हमें अपनी भारतीय परंपरा और संस्कृति को अगली पीढ़ी तक पहुंचाना हमारी जिम्मेदारी है। आज हम हिन्दू नववर्ष मना रहे हैं। हर भारतीय परिवार को अपने बच्चों आदि के साथ बड़े ही धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाना चाहिए। अपने सभी त्यौहार बड़े ही धूमधाम से मनाएं और नई पीढ़ी को भी उसमें शामिल करें और अपनी संस्कृति से उन्हें परिचित कराएं। नवरात्री के पावन दिनों में सभी को संकल्प लेना चाहिए कि हम अपनी बुराईयों को छोड़े और अच्छाईयों को धारण करें। परमपिता परमात्मा शिव और देवी माँ को याद कर उनके वरदानों से अपनी झोली भरें। टीएनसीपी संयुक्त संचालक कृष्णकांत कुशवाहा ने कहा कि जीवन में हमेशा धैर्य रखें। अच्छे समय का इंतजार करें। अच्छा समय जरूर आता हैं। आप जितनी मेहनत करेंगे, उतनी कामयाबी आप निश्चित तौर पर पाएंगे। मेडिटेशन का जीवन में बहुत महत्व है, मेडिटेशन जरूर करें। साइंस कॉलेज जनभागीदारी समिति अध्यक्ष एवं आर्किटेक्ट अजय बंसल, समाजसेविका आशा सिंह, कॉन्फिडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स की संस्थापक सदस्य एवं महिला उद्यमी रीना गांधी, बीके डॉ. गुरचरण सिंह, बीके प्रहलाद भाई ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के अंत में सुनीता सुरेन्द्र वैश्य, रवि चित्रा, गोसावी, विनोद पलक ढींगरा, शीला प्रभु दयाल, राजू, भारती श्रीवास्तव, सविता तिवारी आदि को सम्मानित भी किया गया।

नए भवन का भूमिपूजन

लहरपुर,सीतापुर। ब्रह्माकुमारीज़ के नए सेवाकेंद्र का भूमिपूजन अधिशासी अधिकारी अनिरुद्ध पटेल, सीतापुर से बीके योगेश्वरी दीदी, बनारस सारनाथ से पधारी बीके तपोषी दीदी की उपस्थिति में किया गया। इस दौरान अतिथियों ने दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। साथ ही भूमिपूजन कर नए भवन की आधारशिला रखी। इस मौके पर आसपास से आए बड़ी संख्या में ब्रह्माकुमार भाई-बहनें मौजूद रहे।

'घर बने मंदिर' कार्यक्रम आयोजित

हरपालपुर (छतरपुर), मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ के दिव्य धाम में नवरात्रि के पावन दिनों में घर बने मंदिर प्रोजेक्ट के तहत माता बहनों के लिए कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें चैतन्य देवियों की झांकी सजाई गई। मुख्य अतिथि के रूप में पार्षद कीर्ति अग्रवाल, शिक्षक रामा बहन मौजूद रहीं। सेवाकेंद्र प्रभारी बीकेआशा दीदी ने कहा कि हमारी भारतीय संस्कृति सर्वे भवंतु सुखिन और वसुधैव कुटुंबकम का संदेश देती है। हम सभी एक परमात्मा की रचना हैं।

महिलाओं का किया सम्मान

येवला, महाराष्ट्र। येवला-नाशिक परिसर सप्ताह वृत्तपत्र की ओर से समाज में अलग-अलग प्रकार की सेवा प्रदान करने वाले विशेष कॉकटेल महिलाओं को येवला सेवाकेंद्र में नारी शक्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस दौरान सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु.नीता दीदी और ब्र.कु.अनु दीदी ने शहर में विशेष सराहनीय कार्य कर रहीं महिलाओं का सम्मान कर सम्मानित किया। साथ ही राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से शांति की गहन अनुभूति कराई।

बीके शशि दीदी सम्मानित

इंदौर, मप्र। महिला सिंधी समाज अडोरेंट द्वारा सिंधी कार्निवाल का आयोजन साख्रर पैलेस अडोरल के सभागृह में आयोजित किया गया। इसमें विभिन्न क्षेत्रों में विशेष सेवा कार्य करने वाली मंडली को सम्मानित किया गया। ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से प्रेमनगर सेवाकेंद्र की प्रमुख शशि दीदी का सांसद शंकर लालवानी ने शाल श्रीफल, स्मृति चिन्ह से सम्मान किया। इस दौरान कंचन गिदवानी सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

नई राहें

बीके पुष्पेंद्र, संयुक्त संपादक
शिव आमंत्रण, शांतिवन

जिनकी सांस-सांस में समाया था ईश्वरीय प्रेम, सेवा और साधना

स्मृति शेष। राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

जन्मतिथि : 25 मार्च 1925, महाप्रयाण : 8 अप्रैल 2025

आबू रोड, राजस्थान। दादी मां रतनमोहिनी। शतायु होने के बाद भी योग की दिव्य आभा से संपन्न मुखमंडल। आध्यात्मिक शक्ति, ऊर्जा, पवित्रता और दिव्यता से ओतप्रोत व्यक्तित्व। ज्ञान रत्नों से भरपूर, युवाओं की चहेती और युवा शक्ति की जीती जागती मिसाल थीं। दादी अपने प्रेरक और आदर्श जीवन से इस धरा पर ऐसे पद चिंह छोड़ गईं हैं जो मानव सभ्यता, संस्कृति और समाज का अनंत काल तक मार्गदर्शन करते रहेंगे। 13 साल की बाल्यावस्था में जब आप पहली बार ब्रह्मा बाबा से मिलीं उसी क्षण विश्व परिवर्तन के इस महायज्ञ में खुद को समर्पित करने का दृढ़ संकल्प कर लिया था। आज्ञाकारिता, अध्यात्म के प्रति लगन और योग-साधना के प्रति जुनून के चलते दूरदर्शी, पारखी ब्रह्मा बाबा ने जान लिया था कि एक दिन यह बच्ची अध्यात्म की ध्वजा विश्व गगन में लहराएगी। नारी शक्ति की मिसाल बनकर अपनी मातृ छाया में जग को रोशन करेगी। बाबा का कहना और दादी का करना- यह विशेष गुण ही था कि दादी साधना पथ के साथ निरंतर भौतिक रूप से भी उन्नति करती गईं। 34 साल की युवावस्था में जब आपने लंदन में सर्वधर्म सम्मेलन में अपने ज्ञान की गंगा बहाई तो संत-साधुजन देखते ही रह गए। राजयोग और परमात्म शक्ति का ही कमाल है कि दादी के कदम जहां पड़े वह धरनी अध्यात्म की धारा से फलीभूत होती गई। आपने जहां-जहां ज्ञान के बीज बोए आज वह साधना के शक्तिपुंज बनकर हजारों लोगों के जीवन का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं।

61 वर्ष की उम्र में थामी युवा प्रभाग की कमान-

वर्ष 1985 में राजयोग एजुकेशन एवं रिसर्च फाउंडेशन के तहत युवा प्रभाग की नींव रखी गई। 61 वर्ष की आयु में भी आपके अंदर युवाओं सी ऊर्जा, उमंग-उत्साह, लगन और कुछ कर गुजरने का जज्बा ही था कि पहली अध्यक्षा की कमान सौंपी गई। जिस उम्र में लोग सेवानिवृत्ति की ओर बढ़ते हैं उस उम्र में दादी ने युवाओं का नेतृत्व किया। न केवल युवाओं का नेतृत्व किया बल्कि उनमें अध्यात्म, राजयोग और परमात्म प्रेम का ऐसा बीजारोपण किया कि देखते ही देखते बालब्रह्मचारी, तपस्वी, निर्व्यसनी और मूल्यनिष्ठ युवाओं की रुहानी फौज तैयार हो गई। 1885 में ही आपके नेतृत्व में संपूर्ण भारतवर्ष में भारत एकता युवा पदयात्रा निकाली गई। इस यात्रा ने ब्रह्माकुमारीज़ के इतिहास में स्वर्णिम अध्याय जोड़ दिया। दादी ने युवाओं में ऐसी आशा जगाई कि सर्द हवाओं का बेग, सूरज की तपन और मूसलाधार बारिश भी उनके उमंग-उत्साह के आगे फीकी पढ़ गई। यह पदयात्रा पूरे भारत में अखबारों से लेकर टीवी चैनलों में सुर्खियां बन गई। 1989 में अखिल भारतीय नैतिक जागृति अभियान से युवाओं को जगाने की पहल शुरू की। इसकी सफलता का अंदाजा इस बात से लगा सकते हैं कि देशभर में डेढ़ लाख युवाओं ने नशामुक्ति का संकल्प लिया। 1993 में शांति और सद्भाव के संकल्प के साथ पूरे देश में युवा साइकिल यात्रा निकाली गई। इसके बाद दौर शुरू होता है युवा महोत्सव का। एक के बाद एक हर वर्ष युवा महोत्सव कर युवाओं के बीच आध्यात्मिकता की ऐसी अलख जगाई जो आज भी जारी है।

जीवनभर उम्र पर भारी रहा उत्साह-

जैसे-जैसे दादी की उम्र बढ़ रही थी, वैसे-वैसे उनका उत्साह, ऊर्जा और योग की शक्ति से संपन्नता की ओर कदम बढ़ रहे थे। जीवन के 82 वसंत देख चुकी दादी के मन में अब भी युवाओं को जगाने, उनके व्यक्तित्व को नैतिक मूल्यों से सजाने-संवारने और अध्यात्म-योग की राह पर लाने का असीम उत्साह उन्हें आत्मिक ऊर्जा दे रहा था। उम्र के इस दौर में जब युवा आपसे मिलते तो कहते दादी मां आपकी ऊर्जा के आगे तो हम भी फीके हैं। इस उम्र में भी ब्रह्ममुहूर्त में 3.30 बजे नियमित रूप से उठकर योग-साधना, मुरली क्लास, सेवा, एक्सरसाइज और वॉक करना दादी की दिनचर्या में शामिल रहा।

जब पदयात्रा बन गई युवा क्रांति-

वर्ष 2006 में 82 वर्षीय दादी के नेतृत्व में युवा प्रभाग द्वारा स्वर्णिम भारत युवा पदयात्रा निकाली गई। यह मात्र एक पदयात्रा नहीं थी, बल्कि व्यसनमुक्त युवा, राजयोगी युवा ऊर्जा की ऐसी मिसाल बनी जिसे सदियों तक याद रखा जाएगा। इस यात्रा ने 30 हजार किमी का सफर तय कर लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में तो नाम दर्ज कराया ही, साथ ही युवाओं में एक क्रांति ला दी। पांच लाख युवाओं ने सहभागिता की तो सवा करोड़ युवाओं ने नशामुक्ति का संकल्प लिया। अखबार हों, टीवी या फिर रेडियो हर प्लेटफार्म पर इस पद यात्रा ने सुर्खियां बटोरीं। अनंत ऊर्जा से परिपूर्ण व्यक्तित्व दादी मां ने लगातार यात्राएं निकाल यह साबित कर दिया कि उम्र तो मात्र एक नंबर है। आपने संयुक्त मुख्य प्रशासिका, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका और मुख्य प्रशासिका के रूप में हजारों बहनों और लाखों साधकों का नेतृत्व किया। ऐसी महान, तपस्वी, प्रकाशमय दादी मां के व्यक्तित्व, कृतित्व पर लिखना सूर्य को रोशनी दिखाने के समान है। ऐसे महान व्यक्तित्व के सामने कलम रुक जाती है, शब्द खामोस हो जाते हैं। ऐसी दिव्य आत्माओं पर परमपिता परमात्मा को भी नाज होता है कि वाह! मेरे बच्चे वाह!

ऐसी आदरणीय दादी मां को बारंबार सादर नमन, भावपूर्ण श्रद्धांजली। ओम शांति।

जीवन प्रबंधन

राजयोगिनी बीके शिवानी दीदी,
अंतरराष्ट्रीय प्रेरक वक्ता,
गुरुग्राम, हरियाणा

अगर हम पुराने तरीके से सोचते रहें तो खुशी, सेहत और सुंदर रिश्ते संभव नहीं हैं

कलियुग में सतयुगी होकर रहना ही राजयोग

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

आने वाले समय में दुःख और बढ़ने वाला है। लोग झूठ बोलते हैं, गलतियां करते हैं, धोखा देते हैं, कहना नहीं मानते, वो कलियुग है। उसके बीच रहते हुए मैं आत्मा सतयुग बना रही हूं। देखें अपने आपको मैं आत्मा सतयुग बना रही हूं। मैं आत्मा अपनी बैटरी को चार्ज कर रही हूं। खुद से पूछे मैं आत्मा कैसी हूं? मेरी हर सोच, मेरा बात करने का तरीका, मेरा व्यवहार कैसा है? कुछ ऐसे लोगों को अपनी आंखों के सामने लेकर आएं जो हमारे अनुसार नहीं हैं। जिनके व्यवहार के संग में आकर हम भी कलियुग वाले हो जाते हैं। वो तो कलियुग में हैं कलियुग वाला व्यवहार करेंगे ही हमारे सामने। जो उनके लिए सही वो सही है। अब देखें अपने आपको- मैं आत्मा सतयुग में हूं। मेरा युग और उनका युग ही अलग है। मेरे संस्कार और उनके संस्कार ही अलग हैं।

हमें सतयुग बनाना है। अगर हमें सतयुग बनाना है तो कलियुग के लोगों से बिल्कुल डिफरेंट होना पड़ेगा। जब आपके आस-पास के लोग फोटो खींच रहें हो तो उस क्षण हम क्या करेंगे? मोबाइल जेब में रहने देंगे। लेकिन ये भी याल करना है कि हमें सतयुग बनाना है। एक तो हमें कलियुग की फोटो की जरूरत नहीं है। दूसरी उस दृश्य को हम इस तरह देख रहें हैं कि वह दृश्य सतयुग वाला हो जाए। फिर वो लोग उस दृश्य का फोटो खींचते रहें। हम उस सतयुगी दृश्य को बनाएंगे। वो लोग उस दृश्य का फोटो खींचकर खुशी मनाएंगे। अब हमारा तो रोल चैंज हो गया। अगर हमें सतयुग बनाना है तो दो बातें हैं- एक है सतयुग में जाना और दूसरा है सतयुग हमें बनाना है। दोनों बातों में बहुत फर्क है।

कलियुग में सतयुगी बनकर रहना ही राजयोग

जब हम पीसफुल, निःस्वार्थ, प्रेममयी, शुद्ध आत्मा, स्वभाव संस्कार से बिल्कुल स्टेबल होंगे तो सतयुग महसूस होगा। अगर सामने वाला कलियुग में है तो कलियुग में गुस्सा करना, झूठ बोलना, धोखा देना एलाउ है। लेकिन सतयुग में गुस्सा करना नॉट एलाउड है। सतयुग में बुरा महसूस करना, रोना, उल्टा जवाब देना नॉट एलाउड है। अब ये कलियुग और सतयुग इक्कट्ठे रह पाएंगे? सतयुगी संस्कार लेकर सतयुग में रहना ये तो कोई भी कर सकता है। हमारे साथ सब प्यार से बात करें तब हम भी प्यार से बात करें, तो उसमें क्या ताकत चाहिए? वो तो कोई भी कर सकता है। सतयुग में सतयुगी जैसा रहना सबसे आसान है। कलियुग में कलयुगी जैसे रहना बहुत आसान है। कोई भी कर सकता है। लेकिन कलियुग में सतयुगी होकर रहना वो राजयोग मेडिटेशन है।

हमें अपनी क्वालिटी ऑफ लाइफ सुधारना होगी

महत्वपूर्ण यह है कि इस कलियुग को कैसे पार करना है? दिन प्रतिदिन हमारी क्वालिटी ऑफ लाइफ क्या होती जा रही है? बाहर साधनों के हिसाब से क्वालिटीज ऑफ लाइफ तो बहुत अच्छी होती जा रही है। लेकिन पर्सनल क्वालिटी ऑफ लाइफ बुरी और छोटी होती जा रही है। बुरी क्यों होती जा रही है? क्योंकि हम उसे होने देते हैं। सब लोग गुस्सा करते हैं तो गुस्सा तो करना पड़ता है। कलियुग के लोगों को नकल कर-कर के स्वतः हम लोग भी कलयुगी हो जाएंगे। कलियुग कैसे बनता है? कुछ लोग कलियुगी संस्कार क्रियेट करते हैं। बाकी सबलोग उनको नकल करते हैं।

एक से होती है कलियुग की शुरुआत

मान लिया आज तलाक आम बात हो गया है, लेकिन कभी न कभी किसी एक ने ही शुरुआत की होगी। सबने इक्क` तो नहीं शुरू किया होगा। किसी एक ने शुरू किया होगा। जिस समय पहले एक ने जब तलाक दिया होगा तो उस समय समाज ने क्या कहा होगा? ऐसा कैसे कर सकते हैं? और ये कितने साल पुरानी बात होगी? लगभग ५० साल। ५० साल पहले हमारी मान्यता क्या थी? शादी हो गई या अब वहीं रहना है? चाहे कैसी भी परिस्थितियां हों। ऐसा थोड़ी ही है कि उससे पहले चुनौतियां नहीं थीं। बहुत चुनौतियां थीं बहुत परिस्थितियां थीं। हर तरह के संस्कार थे लेकिन यहां दिमाग में मान्यता थी कि शादी हो गई अब यहां ही रहना है। माता-पिता बेटी को क्या कह के भेजते थे, अब वहीं रहना है। आज क्या बोलते हैं? मुश्किल आ रही है तो वापस आ जाओ। तंग कर रहे हैं तो वापस आ जाओ। तो ये मान्यता क्यों चेंज हुई? किसी एक ने किया, दो ने किया, पांच ने किया बाकी ने नकल किया और धीरे-धीरे समाज ने क्या कहा? ये तो आम बात है। जैसे ही समाज ने इस बात को मुहर लगा दी ये सब अब आम बात है फिर बहुतों ने किया। हमारे दादा-दादी की जो पीढ़ियां हैं उस समय बाहर भोजन नहीं करते थे। ऐसी कोई धारणा नहीं थी। कोई उस समय कहता बाहर खाना खाने जाना है तो अजीब लगता था। बाहर खाना खाने कौन जाता है? आज के बच्चे कहते हैं घर कौन खाना खाएगा? ये सारा खेल इस ५०-१०० सालों में बहुत कुछ हमने बदल दिया। एक ने किया, दो ने किया, पांच ने किया बाकी ने नकल किया। कलियुग इसी तरह नीचे गिरता गया।

अब हमें सतयुग बनाना है

सतयुग कैसे बनेगा और कहां बनाना है? इस सृष्टि पर नहीं बनाना है। हमें सतयुग सिर्फ अपने मन, बुद्धि और अपने घर में बनाना है। जहां हम काम करते हैं वहां बनाना है। ये हमारी जिमेदारी है, कैसे बनेगा? कोई एक शुरुआत करेगा न। अचानक सब तो एक साथ शुरुआत नहीं करने लग जाएंगे। कोई एक करेगा। धीरे-धीरे वो तरीका किसी और को अच्छा लगेगा, तो दूसरा करना शुरू करेगा। धीरे-धीरे बाकी लोग नकल करेंगे और कुछ समय में हमारा घर स्वर्ग बन जाएगा। लेकिन वो एक बहुत महत्वपूर्ण है जो इसकी शुरुआत करेगा। कौन है वो ? जो पहले शुरुआत करेगा कि मैं जहां हूं वहां ही सतयुग बनाऊंगा। अगर मान लिया कि कोई मुझे नकल नहीं करता, मेरे घर, ऑफिस में कोई नहीं बदलता। लेकिन मेरा तो सतयुग बन जाएगा न। इसी कलियुग में रहते हुए हमारी अंदर की एनर्जी कैसे हो जाएगी? वो सतयुग की एनर्जी वाली हो जाएगी। लेकिन उसके लिए अपने आपको बार-बार कहना होगा कि ये करना बहुत आसान है। आज निर्णय लेना है, संकल्प लेना है, चाहे जो भी हो जाए। आज का दिन बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इस समय हम समय की जंक्शन पर खड़े हैं। आज हमारे पास च्वाइस है। अगर हम कलियुग के रास्ते जा रहे हैं तो कलियुग बहुत तीव्र गति से बढ़ता जा रहा है। मतलब एनर्जी बहुत ही तीव्र गति से घटती जा रही है।

सुबह उठते ही करें श्रेष्ठ और शक्तिशाली संकल्प

समस्या- समाधान राजयोगी बीके सूरज भाई, माउंट आबू

- प्रात: आंख खुलते ही सबसे पहले हमाने मन में परमात्मा की याद हो, उनकी ही मन में छवि हो

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

कुछ लोग कहते हैं कि ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा प्राप्त करने के बाद पहले-पहले तो हमें अपने जीवन में काफी परिवर्तन महसूस हुआ परन्तु अब ऐसा लगता है कि उन्नति की गति मंद पड़ गई है। जिस अव्यक्त स्थिति को हमें प्राप्त करना है, उसका चित्र तो हमारे सामने स्पष्ट है परन्तु उस तक पहुंचने में हमारी गति में सन्तोषजनक तीव्रता नहीं आई है। अतः वे जानना चाहते हैं कि अब गति में तीव्रता लाने के लिए क्या साधन अपनाया जाए? ध्यान से देखा जाए तो गति मंद अथवा अतिभंग होने के पांच ही मुख्य कारण होते हैं। यदि उन कारणों का निवारण करने का पुरुषार्थ हम करें तो आत्मोन्नति की पराकाष्ठा पर पहुंच सकते हैं।

अवस्था का आधार है चर्या- मनुष्य की अवस्था का सारा आधार उसकी 'चर्या' है। चर्या में दिनचर्या भी शामिल है, सांध्यचर्या भी और रात्री चर्या भी। मनुष्य सोकर जब उठता है और आंख खोलता है। अथवा पहला संकल्प करता है तब से उसकी दिनचर्या प्रारम्भ हो जाती है और रात्रि को सुषुप्त अवस्था तक जो भी संकल्प-विकल्प या कर्म करता है, वे सभी उसकी चर्या में ही गण्य हैं। यहां तक कि जो स्वप्न वह देखता है, वह भी एक प्रकार से उसकी चर्या का ही अर्द्धचेत अवस्था में विस्तार है। चर्या नियमित, सन्तुलित एवं ज्ञानानुकूल न होने से भी मनुष्य का आध्यात्मिक पुरुषार्थ ढीला हो जाता है। अतः सबसे पहले मनुष्य को अपनी चर्या पर ही ध्यान देना चाहिए। यहां हम चर्या के कुछ आवश्यक पहलुओं पर प्रकाश डाल रहे हैं।

उठने के लिए विधि-

प्रातः उठते ही सबसे पहला संकल्प, पहला दृश्य और बुद्धि में सबसे पहली स्मृति परमात्मा ही की आनी चाहिए और चारपाई पर उठकर योग से ही दिनचर्या की शुरुआत करनी चाहिए। मन में यह प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि आज दिनचर्या और अवस्था कल की अपेक्षा ज्यादा अच्छी रहेगी। उस समय प्रतिज्ञा करना अथवा शुभ संकल्प करना गोया कार्यक्षेत्र में उतरने से पहले अपने मनोबल को एक दिशा देने की तरह है जो बहुत ही लाभप्रद है। कहावत है कि मनुष्य जैसा सोचता है वैसा ही हो जाता है।

ठीक मनसा से सोना- प्रातः ठीक समय पर उठने के लिए और मानसिक-शारीरिक तौर पर चुस्त महसूस करने के लिए आवश्यक है कि हम ठीक समय पर सोयें। यद्यपि निद्रा पर जितनी विजय प्राप्त हो सके उतना अच्छा ही है। देखा गया है कि रात्रि को सोने के लिये 10 बजे का समय एक आदर्श समय होता है। क्योंकि इस समय सोने से मनुष्य प्रातः 3 या 4 बजे उठ सकता है और उस समय के एकान्त, शान्त और सतोगुणी वातावरण में योगाभ्यास एवं प्रभु-मिलन का आनन्द ले सकता है। यदि कोई मनुष्य 10 बजे की बजाय देरी से सोता है तो वह या तो प्रातः देर से उठता है या उसे दिन-भर थकावट, आलस्य, भारीपन या निद्रा का प्रवाह महसूस होता है। इसका प्रभाव उसकी सारी दिनचर्या पर पड़ता है। अतः अपनी दिनचर्या को ठीक करना जरूरी है।

मानसिक तैयारी जरूरी- रात्रि को निद्रा के लिए मानसिक तैयारी भी हमें ज्ञानानुकूल ही करनी चाहिए। शयन-शैय्या पर बैठकर पहले हमें कुछ समय शिव बाबा परमपिता परमात्मा की मधुर स्मृति का अभ्यास करना चाहिए। यदि हमारे पास अधिक समय न भी हो या हम थकावट महसूस कर रहे हों तो भी पांच मिनट ही सही, परन्तु हमें ईश्वरीय स्मृति में बैठना अवश्य ही चाहिए। सोने की चारपाई पर जाकर पड़ जाना यह योगी की चर्या नहीं है। योगी तो पहले अपने बिस्तर को ठीक करके, हाथ-मुंह स्वच्छ करके तब चारपाई पर बैठता है। सहज रूप से उस पिता, माता अथवा साजन रूप परमात्मा से वह मनोमिलन मनाता है, वह इस स्थूल लोक में सोने से पहले स्वयं को सूक्ष्म प्रकाशमय लोक में ले जाता है और अपने स्वरूप का और प्रभु का चिन्तन करते हुए उस परमपिता से निद्रा के लिए आज्ञा लेकर आत्मिक स्थिति में लेट जाता है। मानो वह अपनी कर्मेन्द्रियों रूपी नौकर-चाकरों को आराम के लिए छुट्टी दे देता है और स्वयं निःसंकल्प अवस्था में टिक जाता है। ऐसे सोने वाले योगी की निद्रा भी सतोगुणी या योगनिद्रा होती है और वह सतयुगी पावन सृष्टि में, सूक्ष्म देवलोक के अथवा पुरुषोत्तम संगमयुगी ज्ञान जगत के ही स्वप्न देखता है। वह जिस समय उठने का संकल्प करके सोता है, उस समय ही जाग जाता है।

RNI No.: RAJHIN/2013/53539, Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26. Posting at Shantivan- 307510 (Abu Road)
Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2024-26, Posting on 17 to 20 of Each Month, Published on 14 April. 2025
» प्रकाशक व मुद्रक: करुणाकर शेट्टी द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कार प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित
एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित » संपादक: बीके कोमल » संयुक्त संपादक: बीके पुष्पेन्द्र